तीसरा अध्याय
वर्ण विकृति

प्राकृत शब्दावलि को जानने के पूर्व संस्कृत वर्णों में होने वाली उस विकृति को भी जान लेना आवश्यक है, जिसके आधार पर प्राकृत शब्द राशि खड़ी की जा सकती है। यहाँ वर्ण विकृति के साधारण और आवश्यक नियमों का विवेचन किया जाता है।

(१) विजातीय—भिन्न वर्गवाले संयुक्त व्यंजनों का प्रयोग प्राकृत में नहीं होता। अतः प्रायः पूर्ववर्ती व्यंजन का लोप होकर शेष को द्वित्व कर देते हैं।[१] उदाहरण—

उत्कण्ठा = उक्कंठा—इस उदाहरण में विजातीय त् और क् का संयोग है, अतः पूर्ववर्ती त् का लोपकर शेष क् को द्वित्व कर दिया है। ण् का अनुस्वार हो जाने से 'उक्कंठा' शब्द बना है।

नक्तञ्चरः = णक्कंचरो—यहाँ भी त् + क् में से त् का लोप हो गया है और क् को द्वित्व हो गया है।

याज्ञवल्क्येन = जण्णवक्केण – में ज् + ञ् = ज्ञ में से ज् का लोपकर ञ् + ण् को द्वित्व कर दिया तथा ल् + क् + य् = ल्क्य में से विजातीय वर्ग ल् + य् का लोपकर शेष क् को द्वित्व कर दिया है।

शक्रः > सक्को—र् + क्—में र् का लोप और क् को द्वित्व।

धर्मः > धम्मो—र् + म् में से र् का लोप और म् को द्वित्व।

विक्लवः > विक्कवो—क् + ल् में से ल् का लोप और क् को द्वित्व।

उल्का > उक्का—ल् + क् में ल् का लोप और क् को द्वित्व।

पक्वम् > पक्कं, पिक्कं—व् + क् में से व् का लोप और क् को द्वित्व।

खड्गः > खग्गो—ड् + ग् में से ड् का लोप और ग् को द्वित्व।

अग्नीन् > अग्गिणी—ग् + न् में से न् का लोप और ग् को द्वित्व।

योग्यः > जोग्गो—ग् + य् में से य् का लोप और ग् को द्वित्व।

---

१. क—ग—ट—ड—त—द—प—श—ष—स— क— पामूर्ध्वं लुक् ८।२।७७. एषां संयुक्तवर्णसंबंधिनामूर्ध्वं स्थितानां लुग् भवति। हे.।

अनादौ शेषादेशयोर्द्वित्वम् ८।२। ८९. पदस्यानादौ वर्तमानस्य शेषस्यादेशस्य च द्वित्वं भवति। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

कचग्रहः > कअग्गहो–ग् + र् में से र् का लोप और ग् को द्वित्व।
मार्गः > मग्गो–र् + ग् में से र् का लोप और ग् को द्वित्व।
वल्गा > वग्गा–ल् + ग् में से ल् का लोप और ग् को द्वित्व।
सप्तविंशतिः > सत्तावीसा–प् + त् में से प् का लोप और त् को द्वित्व।
कर्णपुरम् > कण्णउरं–र् + ण् में से र् का लोप और ण् को द्वित्व।
मित्रम् > मित्त–त् + र् में से र् का लोप और त् को द्वित्व।
कर्म > कम्म–र् + म् में से र् का लोप और म् को द्वित्व।
चर्म > चम्म–र् + म् में से र् का लोप और म् को द्वित्व।
उत्सवः > उस्सवो–त् + स् में से त् का लोप और स् को द्वित्व।
उत्पलम् > उप्पलं–त् + प् में से त् का लोप और प् को द्वित्व।
उद्गति > उग्गइ–द् + ग् में से द् का लोप और ग् को द्वित्व।
अभिग्रहः > अहिग्गहो–ग् + र् में से र् का लोप और ग् को द्वित्व।
भुक्तं > भुत्तं–क् का लोप हुआ और त् को द्वित्व।
मुद्गु > मुग्गू–द् का लोप और ग् को द्वित्व।
दुग्धम् > दुद्धं–ग् का लोप और ध् को द्वित्व।
कट्फलम् > कप्फलं–ट् का लोप और फ् को द्वित्व।
षड्जः > सज्जो–ड् का लोप और ज् को द्वित्व।
सुप्तः > सुत्तो–प् का लोप और त् को द्वित्व।
गुप्तः > गुत्तो–प् का लोप और त् को द्वित्व।
निश्चलः > णिच्चलो–श् का लोप और च् को द्वित्व।
गोष्ठी > गोट्ठी–ष् का लोप और ठ् को द्वित्व।
षष्ठः > छट्ठो–ष् का लोप और ठ् को द्वित्व।
निष्ठुरः > निट्ठुरो–ष् का लोप और ठ् को द्वित्व।
स्खलितः > खलिओ–स् का लोप।
स्नेहः > नेहो–स् का लोप।
अन्तःपातः > अन्तप्पाओ–विसर्ग का लोप और प् को द्वित्व।

अपवाद–म्ह, ण्ह, न्ह, ल्ह, य्ह और द्र।

(२) वर्ग के पाँचवें अक्षरों का अपने वर्ग के अक्षरों के साथ भी कहीं–कहीं संयोग देखा जाता है। यथा–

अङ्कः > अङ्के, अंको–ङ् + क् का संयोग है।
अङ्गारः > इङ्गालो।
तालवृन्तम् > तालवेण्टं।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

वञ्चनीयम् > वञ्चणीयम्।
स्पन्दनम् > फन्दनं।
उदुम्बरं > उम्बरं।

(३) शब्दों के अन्त में रहने वाले हलन्त व्यंजन का सर्वत्र लोप होता है।[१] जैसे–

जाव < यावत्–अन्तिम हलन्त व्यंजन त् का लोप हुआ है।
ताव < तावत् ,, ,,
जसो < यशस्–हलन्त स् का लोप हुआ है।
णहं < नभस् ,, ,,
सिरं < शिरस् ,, ,,
तम < तमस् ,, ,,

(४) श्रत् और उत् इन दोनों शब्दों के अन्त्य व्यंजन का लोप नहीं होता।[२] यथा–

सद्धा < श्रद्धा–श्रत् के अन्तिम हलन्त व्यंजन त् का लोप नहीं हुआ है।
उण्णयं < उन्नयम्–उत् के अन्तिम हलन्त व्यंजन त् का लोप नहीं हुआ है।

(५) निर् और दुर् के अन्तिम व्यंजन र् का लोप विकल्प से होता है।[३] जैसे–

निस्सहं, नीसहं < निर् + सहम् – यहाँ निर् के र् का लोप विकल्प से हुआ है।

दुस्सहो, दूसहो < दुस्सहः–दुर् के र् का लोप होने पर दूसहो और लोपाभाव में दुस्सहो शब्द बनता है।

(६) स्वर वर्ण के पर में रहने पर अन्तर्, निर् और दुर् के अन्त्य व्यंजन का लोप नहीं होता[४]। जैसे–

अन्तरप्पा < अन्तरात्मा–अन्तर् के र् का लोप नहीं हुआ है।
अन्तरिदा < अन्तरिता ,, ,,
णिरुत्तरं < निरुत्तरम्–निर् के र् का लोप नहीं हुआ है।
णिराबाधं < निराबाधम् ,, ,,
निरवसेसं < निरवशेषम् ,, ,,

---

१. अन्त्यव्यञ्जनस्य ८।१।११. शब्दानां यद् अन्त्यव्यञ्जनं तस्य लुग् भवति। हे.।
२. न श्रदुदोः ८।१।१२. श्रद् उद् इत्येतयोरन्त्यव्यञ्जनस्य लुग् न भवति। हे.।
३. निर्दुरोर्वा ८।१।१३. निर् दुर् इत्येतयोरन्त्यव्यञ्जनस्य वा लुग् भवति। हे.।
४. स्वरेन्तश्च ८।१।१४. अन्तरो निर्दुरोश्चान्त्यव्यञ्जनस्य स्वरे परे लुग् न भवति। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

दुरुत्तरं < दुरुत्तरम्–दुर् के र् का लोप नहीं हुआ है।
दुरागदं < दुरागतम् ,, ,,
दुरवगाहं < दुरवगाहम् ,, ,,

विशेष—कहीं–कहीं निर् के रेफ का लोप देखा जाता है।[१] जैसे–

अन्तोवरि < अन्तर् + उपरि–यहाँ अन्तर् के रेफ का लोप हुआ है।
णिउक्कण्ठं < निरुत्कण्ठम्–निर् के रेफ का लोप हुआ है।

(७) विद्युत् शब्द को छोड़कर स्त्रीलिंग में वर्तमान सभी व्यंजनान्त शब्दों के अन्त्य व्यञ्जन का आत्व होता है।[२] ईषत्स्पृष्टतर होने वाली[३] यश्रुति के अनुसार आ के स्थान पर या भी हो जाता है। जैसे–सरिया, सरिअ < सरित्–अन्तिम हलन्त व्यञ्जन त् का लोप न होकर उसके स्थान पर आ हो गया है।

संपया, संपआ < संपद्–अन्तिम हलन्त व्यञ्जन का लोप न होकर उसके स्थान पर आ हो गया है।

वाया, वाआ < वाक् ,, ,, ,,
अच्छरा < अप्सरस् ,, ,, ,,
पडिवया, पडिवआ < प्रतिपद् ,, ,, ,,
वाआच्छलं < वाक्छलम्–क् के स्थान पर आ हुआ है।
वाआविहवो < वाग्विभवः–ग् के स्थान पर आ हुआ है।

विशेष—विद्युत् शब्द का प्राकृत में विज्जू होता है।[४]

(८) स्त्रीलिंग में वर्तमान रेफान्त शब्दों के अन्तिम र् को रा आदेश होता है।[५] जैसे–

गिरा < गिर् (गीः) हलन्त व्यंजन र् के स्थान पर रा हो गया है।
धुरा < धुर् (धूः) ,, ,, ,, ,,
पुरा < पुर् (पूः) ,, ,, ,, ,,
महुअमहुरगिरा < मधूकमधुरगिरः– ,, ,,

(९) क्षुध् शब्द के अन्त्य व्यंजन का 'हा' आदेश होता है[६]। यथा–

---

१. क्वचिद् भवत्यपि ८।१।१४ की वृत्ति हे.।
२. स्त्रियामादविद्युतः ८।१।१५. स्त्रियां वर्तमानस्य शब्दस्यान्त्यव्यञ्जनस्य आत्वं भवति विद्युच्छब्दं वर्जयित्वा। हे.।
३. बहुलाधिकाराद् ईषत्स्पृष्टतरयश्रुतिरपि–८।१।१५ की वृत्ति। हे.।
४. अविद्युत इति किम्–उपर्युक्त सूत्र की वृत्ति।
५. रो रा८।१।१६.स्त्रियां वर्तमानस्यान्त्यस्य रेफस्य रा इत्यादेशो भवति। आत्वापवादः हे.।
६. क्षुधो हा ८।१।१७. क्षुध् शब्दस्यान्त्यव्यञ्जनस्य हादेशो भवति। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

छुहा < क्षुत् या क्षुध्–अन्त्य व्यञ्जन त् या ध् के स्थान पर 'हा' हुआ है।

(१०) शरत् प्रभृति शब्दों के अन्तिम हलन्त्य व्यञ्जन के स्थान पर अ आदेश होता है[१]। यथा–

सरअ[२] < शरत्–त् के स्थान पर अ हुआ है।

भिसअ < भिषक्–क् के स्थान पर अ हुआ है।

(११) दिश् और प्रावृष् शब्दों के अन्तिम व्यञ्जनों के स्थान में स आदेश होता है।[३] जैसे–

दिसा < दिक्–क् के स्थान पर स आदेश हुआ है।

पाउसो < प्रावृट्–ट् के स्थान पर स आदेश हुआ है।

(१२) आयुष् और अप्सरस् के अन्त्य व्यञ्जनों का विकल्प से स आदेश होता है।[४] यथा–

दीहाउसो, दीहाऊ < दीर्घायुस्, दीर्घायुः।

अच्छरसा, अच्छरा < अपसरस्, अप्सराः।

(१३) ककुभ् शब्द के अन्त्य व्यञ्जन को ह आदेश होता है।[५] जैसे–

कउहा < ककुभू, ककुप्–भ् के स्थान में ह हुआ है।

(१४) धनुष् शब्द के अन्त्य व्यञ्जन के स्थान में विकल्प से ह आदेश होता है[६]। यथा–

धणुहं, धणू < धनुष्, धनुः–ष् के स्थान पर विकल्प से ह हुआ है।

विकल्पाभाव पक्ष में ष् का लोप हो गया है और पूर्व स्वर को दीर्घ कर दिया है।

(१५) म् के अतिरिक्त अन्य व्यञ्जनों के स्थान पर भी विकल्प से अनुस्वार होता है।[७] यथा–

सक्खं < साक्षात्–त् के स्थान पर अनुस्वार हुआ है।

जं < यत्–त् के स्थान पर अनुस्वार।

तं < तत्– ,, ,,

---

१. शारदादेरत् ८।१।१८. शरदादेरन्त्यव्यञ्जनस्य अत् भवति। हे.।

२. शरदो दः ४।१०. शरच्छब्दस्यान्त्यहलो दो भवति। यथा–सरदो–वर.।

३. दिक् प्रावृषोः सः ८।१।१९ . एतयोरन्त्यव्यञ्जनस्य सो भवति। हे.।

४. आयुरप्सरसोर्वा ८।१।२०. एतयोरन्त्यव्यञ्जनस्य सो वा भवति। हे.।

५. ककुभो हः ८।१।२१. ककुभ् शब्दस्यान्त्यव्यञ्जनस्य हो भवति। हे.।

६. धनुषो वा ८।१।२२. धनुःशब्दस्यान्त्यव्यञ्जनस्य हो वा भवति। हे.।

७. बहुलाधिकाराद् अन्यस्यापि व्यञ्जनस्य मकारः। ८।१।२४ सूत्र की वृत्ति–हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

वीसुं < विष्वक्–क् के स्थान पर अनुस्वार होता है।
पिहं < पृथक्– ,, ,,
सम्मं < सम्यक्– ,, ,,

(१६) व्यञ्जन वर्णों के पर में रहने पर ङ्, ञ्, ण् और न् के स्थान में अनुस्वार होता है[१]। जैसे–

पंत्ती < पङ्क्तिः
परंमुहो–पराङ्मुखः
कंचुओ < कञ्चुकः

(१७) माल्यशब्द और स्थाधातु के पूर्व में रहने वाले निर् और प्रति के स्थान में विकल्प से ओत् और परि का आदेश होता है[२]। जैसे–

ओमल्लं, ओमालं, निम्मलं < निर्माल्यम्–निर् के स्थान में ओत् होने से ओमल्लं या ओमालं होता है और ओ के अभाव में निम्मलं बनता है।

परिट्ठा, पइट्ठा < प्रतिष्ठा–प्रति के स्थान में परि आदेश होने से परिट्ठा और परि आदेश के अभाव में पइट्ठा रूप बनता है।

परिट्ठिअं, पइट्ठिअं < प्रतिष्ठितम् –परि आदेश होने से परिट्ठिअं और परि आदेश के अभाव में पइट्ठिअं रूप बनता है।

(१८) जिन श्, ष् और स् से पूर्व अथवा पर में रहने वाले य्, र्, व्, श्, ष् और स् वर्णों का प्राकृत के नियमानुसार लोप हुआ हो उन शकार, षकार और सकारों के आदि स्वर को दीर्घ होता है।[३] उदाहरण–

पासइ = पस्सइ < पश्यति–'पश्यति' के य का लोप होने से स् को द्वित्व होता है। सरलीकरण की क्रिया द्वारा अन्तिम व्यञ्जन त् का लोप होने से स्वर इ शेष रहता है और स् का लोप होने से इस नियम द्वारा दीर्घ हो गया है।

कासवो < कस्सवो = काश्यपः–य का लोप और दीर्घ।
वीसमइ < विश्राम्यति–र् का लोप और दीर्घ।
वीसामो < विश्रामः– ,, ,,
मीसं < मिश्रम्– ,, ,,

---

१. ङ–ञ–ण–नो व्यञ्जने ८।१।२५. ङ, ञ, ण, न इत्येतेषां स्थाने व्यञ्जने परे अनुस्वारो भवति। हे.।

२. निष्प्रती ओत्परी माल्य–स्थोर्वा ८।१।३८. निर् प्रति इत्येतौ माल्यशब्दे स्थाधातौ च परे यथासंख्यम् ओत् परि इत्येवं रूपौ वा भवतः। हे.।

३. लुप्त–य–र–व–श–ष–सां श–ष–सां दीर्घः ८।१।४३. प्राकृत लक्षणवशाल्लुप्ता याद्या उपरि अधो वा येषां शकारषकारसकाराणां तेषामादेः स्वरस्य दीर्घो भवति। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

संफासो < संफस्सो = संस्पर्शः–र् का लोप और स् को द्वित्व, पश्चात् स् लुक् और दीर्घ।

आसो < अस्सो = अश्वः–व् लोप, द्वित्व, सलोप और दीर्घ।

वीससइ < विस्ससइ = विश्वसिति–,, ,,

वीसासो < विस्सासो = विश्वासः–,, ,,

दूसासणो < दुश्शासनः–श् का लोप और दीर्घ

मणासिला < मनःशिला–,, ,, ,,

सीसो < सिस्सो =शिष्यः–य् लोप, द्वित्व, स् लोप और दीर्घ।

पूसो < पुस्सो = पुष्यः–,, ,, ,, ,,

मणूसो < मणुस्सो = मनुष्य– ,, ,, ,,

कासओ < कस्सओ = कर्षकः–र् लोप, द्वित्व, स् लोप और दीर्घ।

वासा < वस्सा = वर्षा– ,, ,, ,,

वासो < वस्सो = वर्षः– ,, ,, ,,

वीसाणो < विस्साण = विष्वणः–व लोप ,, ,,

वीसुं < विस्सुं = विष्वक्–व् लोप, उत्व, स को द्वित्व, स् लोप और दीर्घ।

नीसित्तो < निस्सित्तो = निष्षिक्तः–ष् लोप, द्वित्व, स् लोप और दीर्घ।

सासं < सस्सं = सस्यम्–य लोप, द्वित्व, स् लोप और दीर्घ।

कासइ < कस्सइ = कस्यचित्– ,, ,, ,,

ऊसो = उस्सो > उस्मः–र् लोप, स् द्वित्व, स् लोप और दीर्घ।

वीसंभो = विस्संभो > विस्रंभः–व लोप, ,, ,,

विकासरे = विकस्सरो > विकस्वरः– ,, ,,

नीसो = निस्सो > निःस्वः– ,, ,, ,,

नीसहो < निस्सहः–स लोप और दीर्घ

(१९) समृद्ध्यादि गण के शब्दों में आदि अकार को विकल्प से दीर्घ होता है।[१] उदाहरण–

सामिद्धी, समिद्धी < समृद्धिः।

पाअडं, पअडं < प्रकटम्।

---

१. अतः समृद्ध्यादौ वा ८।१।४४. समृद्धि इत्येवमादिषु शब्देषु आदेकारस्य दीर्घो वा भवति। समृद्धि गण के शब्द निम्न हैं–

समृद्धिः प्रतिसिद्धिश्च प्रसिद्धिः प्रकटं तथा।
प्रसुप्तञ्च च प्रतिस्पर्द्धी प्रतिपच्च मनस्विनी॥
अभिजातिः सदृक्षश्च समृद्ध्यादिरयं गणः। –कल्पलतिका

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

पासिद्धी, पसिद्धी < प्रसिद्धिः।
पाडिवआ, पडिवआ < प्रतिपदा।
पासुत्तं, पसुत्तं < प्रसुप्तम्।
पाडिसिद्धी, पडिसिद्धी < प्रतिसिद्धि।
सारिच्छो, सरिच्छो < सदृक्षः।
माणंसी, मणंसी < मनस्वी।
माणंसिनी, मणंसिनी < मनस्विनी।
आहिआई, अहिआई < अभियाति।
पारोहो, परोहो < प्ररोहः।
पावासू, पवासू < प्रवासी।
पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी < प्रतिस्पर्द्धी।

विशेष—प्राकृत प्रकाश में इस गण को आकृतिगण माना गया है।[१] हेमचन्द्र[२] ने भी आकृतिगण होने से निम्न शब्दों की भी निष्पत्ति बतलायी है।

आफंसो < अस्पर्शः
पारकेरं, पारक्कं < परकीयम्।
पावयणं < प्रवचनम्।
चाउरन्त < चतुरन्तम्।

(२०) दक्षिण शब्द में आदि अकार को ह के पर में रहने पर दीर्घ होता है।[३] जैसे–

दाहिणो = दक्षिणः–क्ष के स्थान पर ह होने से दीर्घ हुआ है। क्ष के स्थान पर ह नहीं होने पर 'दक्षिणः' का दक्खिणो यह रूप बनता है।

(२१) स्वप्न आदि शब्दों में आदि अ का इकार होता है।[४] उदाहरण–

सिविणो, सिमिणो, सुमिणो < स्वप्नः।
इसि < ईषत्।
वेडिसो < वेतसः
विलिअं < व्यलीकम्।
विअणं < व्यजनम्।

---

१. आ समृद्ध्यादिसु वा १।२ –आकृतिगणोयम्। वर.।
२. आकृतिगणोयम् तेन अस्पर्शः, आफंसो–इत्यादि ८।१।४४ सूत्र की वृत्ति हे.।
३. दक्षिणे हे ८।१।४५. दक्षिणशब्दे आदेरतो हे परे दीर्घो भवति।
४. इः स्वप्नादौ ८।१।४६. स्वप्न इत्येवमादिषु आदेरस्य इत्वं भवति। हे.।
इदीषत्पक्व स्वप्नवेतसव्यजनमृदङ्गाङ्गारेसु १।३ वर.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

मुइंगो < मृदङ्गः।
किविणो < कृपणः।
उत्तिमो < उत्तमः।
मिरिअं < मरिचम्।
दिण्णं < दत्तम्।

(२२) पक्व, अङ्गार और ललाट शब्द को विकल्प से इकार होता है।[१] जैसे–

पिक्कं, पक्कं < पक्वम्
इंगालो, अङ्गारो < अङ्गारः
णिडालं, णडालं < ललाटम्

(२३) मध्यम और कतम शब्द में द्वितीय अकार के स्थान पर इत्व होता है।[२] जैसे–

मज्झिमो < मध्यमः
कइमो < कतमः

(२४) सप्तपर्ण शब्द में द्वितीय अकार के स्थान पर विकल्प से इत्व होता है।[३] यथा–

छत्तिवण्णो, छत्तवण्णो < सप्तपर्णः

(२५) हर शब्द में आदि अकार के स्थान पर विकल्प से ईकार होता है।[४] यथा–

हीरो, हरो < हरः

(२६) ध्वनि और विष्व शब्द में अकार के स्थान पर उकार होता है।[५] जैसे–

भुणी < ध्वनिः–ध् के स्थान पर झ् हुआ है और व का सम्प्रसारण होने से उ हुआ है।

वीसुं < विष्वम्–यहाँ पर भी व का संप्रसारण हुआ है।

(२७) वन्द्र और खण्डित शब्दों में आदि अकार का विकल्प से णकार सहित उत्व होता है।[६] यथा–

---

१. पक्वाङ्गार-ललाटे वा ८।१।४७. एष्वादेरत इत्वं वा भवति। हे.।
२. मध्यमकतमे द्वितीयस्य ८।१।४८. मध्यमशब्दे कतमशब्दे च द्वितीस्यात इत्वं भवति। हे.।
३. सप्तपर्णे वा ८।१।४९. सप्तपर्णे द्वितीयस्यात इत्वं वा भवति। हे.।
४. ईहरे वा ८।१।५१. हरशब्दे आदेरत ईर्वा भवति। हे.।
५. ध्वनि विष्वचोरुः ८।१।५२. अनयोरादेरस्य उत्वं भवति। हे.।
६. वन्द्रखण्डितेणा वा ८।१।५३. अनयोरादेरस्य णकारेण सहितस्य उत्वं वा भवति। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

वुन्द्रं,वन्द्रं < वन्द्रं–अकार के स्थान पर न् (ण्) सहित उत्व हुआ है।

खुड्डिओ, खण्डिओ < खण्डितः– ,, ,,

(२८) गवय शब्द में वकार के अकार के स्थान पर उत्व होता है।[१] जैसे–

गउओ, गउआ < गवयः।

(२९) प्रथम शब्द में पकार और थकार के स्थान पर युगपत् और क्रमशः उकार होता है[२]। जैसे–

पुढुमं, पुढमं, पढुमं, पढमं < प्रथमम्

(३०) अभिज्ञ आदि शब्दों में णत्व करने पर ज्ञ के आकार का उत्व होता है।[३] जैसे–

अहिण्णू < अभिज्ञः

सव्वण्णू < सर्वज्ञः–शौरसेनी में सव्वगो और पैशाची में सव्वञ्ञो।

आगमण्णू < आगमज्ञः।

विशेष–णत्वाभाव में अहिज्जो < अभिज्ञः, सव्वज्जो < सर्वज्ञ होते हैं।

(३१) शय्या आदि शब्दों में आदि अकार का एकार आदेश होता है।[४] जैसे–

सेज्जा < शय्या–अकार का एकार और य्या का ज्जा।

सुंदेरं < सुन्दरम्–दकारोत्तर अकार का एकार।

उक्केरो < उत्करः–त का लोप और क को द्वित्व तथा अ को एकार।

तेरहो < त्रयोदशः– त के र का लोप, अकार को एकार तथा दश के स्थान में रहा।

अच्छेरं < आश्चर्यम्–पूर्ववर्ती आ को ह्रस्व कर दिया और श्च के अ को एकार तथा श्च के स्थान पर च्छ।

पेरंतं < पर्यन्तम्– अकार को एकार।

वेल्ली < वल्लिः– ,, ,,

---

१. गवये वः ८।१।५४. गवयशब्दे वकाराकारस्य उत्वं भवति। हे.।

२. प्रथमं प्रथोर्वा ८।१।५५. प्रथमशब्दे पकारथकारयोरकारस्य युगपत् क्रमेण च उकारो वा भवति। हे.।

३. ज्ञो णत्वेभिज्ञादो ८।१।५६. अभिज्ञ एवं प्रकारेषु ज्ञस्य णत्वे कृते ज्ञस्यैव अत उत्वं भवति। हे.।

४. एच्छय्यादौ ८।१।५७. शय्यादिषु आदेरस्य एत्वं भवति। हे.। शय्यात्रयोदशाश्चर्यं पर्यन्तोत्करवल्लयः। सौन्दर्यं चेति शय्यादिगणः शेषस्तु पूर्ववत्।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

गेडुअं < कन्दुकम्–क के स्थान पर ग और अकार को एकार, दन्त्य द के स्थान पर मूर्धन्य ड, क का लोप और स्वर शेष।

एत्थ < अत्र–अ का एत्व तथा त्र का त्थ।

(३२) ब्रह्मचर्य शब्द में चकारोत्तरवर्ती अ के स्थान पर एत्व होता है।[१] जैसे–

बम्हचेरं < ब्रह्मचर्यम्।

(३३) अन्तर् शब्द में तकारोत्तरवर्ती अकार के स्थान पर एत्व होता है।[२] जैसे–

अन्तेउरं < अन्तःपुरं। अन्तेआरी < अन्तश्चारी।

कहीं अन्तर शब्द में तकारोत्तरवर्ती अकार को एत्व नहीं होता है।[३] जैसे–

अन्तग्गयं < अन्तर्गतम्।

अन्तो–वीसम्भनिवेसिआणं < अन्तःविस्रम्भनिवेसितानाम्।

(३४) पद्म शब्द के आदि के अकार के स्थान पर ओत्व होता है।[४] जैसे–

पोम्मं, पउमं < पद्मम्।

(३५) नमस्कार और परस्पर शब्द में द्वितीय अकार के स्थान पर ओत्व होता है।[५] यथा–

नमोक्कारो < नमस्कारः; परोप्परं < परस्परम्।

(३६) अर्पि धातु में आदि के अ को विकल्प से ओ होता है।[६] जैसे–

ओप्पेइ, अप्पेइ < अर्पयति–ओत्व के अभाव में एत्व होता है।

ओप्पिअं, अप्पिअं < अर्पितम्।

(३७) स्वप् धातु में आदि के अ के स्थान पर ओत् और उत् आदेश होते हैं।[७] जैसे– सोवइ, सुवइ < स्वपिति।

(३८) नञ् के बाद में आने वाले पुनर् शब्द के अ के स्थान में आ और आइ विकल्प से आदेश होते हैं।[८] जैसे–

---

१. ब्रह्मचर्ये चः ८।१।५९. ब्रह्मचर्यशब्दे चस्य अत एत्वं भवति। हे.।

२. तोन्तरि ८।१।६०. अन्तरशब्दे तस्य अत एवं भवति। हे.।

३. क्वचिन्न भवति। हे.।

४. ओत्पद्मे ८।१।६१. पद्म शब्दे आदेरत ओत्वं भवति। हे.।

५. नमस्कार–परस्परे द्वितीयस्य ८।१।६२. अनयोर्द्वितीयस्य अत ओत्वं भवति। हे.।

६. वार्षौ ८।१।६३. अर्पयतौ धातौ आदेरस्य ओत्वं वा भवति। हे.।

७. स्वपावुच्च ८।१।६४. स्वपितौ धातौ आदेरस्य ओत् उत् च भवति। हे.।

८. नात्पुनर्यादाई वा ८।१।६५. नञः परे पुनः शब्दे आदेरस्य आ आइ इत्यादेशौ वा भवतः। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

ण उणा < न पुनः–आ आदेश हुआ है।
ण उणाई < न पुनः–आइ आदेश हुआ है।
ण उण < न पुनः–विकल्प भाव पक्ष में।

(३९) अव्ययीं में और उत्खात, चामर, कालक, स्थापित, प्रतिस्थापित, संस्थापित, प्राकृत, तालवृन्त, हालिक, नाराच्य, बलाका, कुमार, खादित, ब्राह्मण एवं पूर्वाह्ण शब्दों में आदि आकार का अकार विकल्प से होता है।[१]

मज्जारो, माज्जारो < मार्जारः	मरलो, मराली < मरालः
पत्थरो, पत्थारो < प्रस्तारः	पहरो, पहारो < प्रहारः
जह, जहा < यथा	तह, तहा < तथा
अहव, अहवा < अथवा	उक्खअं, उक्खाअं < उत्खातम्
चमरं, चामरं < चामरम्	कलओ, कालओ < कालकः
ठविअं, ठाविअं < स्थापितम्	परिठविअं, परिठाविअं < प्रतिष्टापितम्
संठविअं, संठाविअं < संस्थापितम्	पउअं, पाउअं < प्राकृतम्
तलवेण्टं, तालवेण्टं < तालवृन्तम्	हलिओ, हालिओ < हालिकः
णराओ, णाराओ < नारायः	वलाआ, वालाआ < बलाका
कुमरो, कुमारो < कुमारः	खइअं, खाइअं < खादितम्
बम्हणो, बाम्हणो < ब्राह्मणः	पुव्वण्हो, पुव्वाण्हो < पूर्वाण्हः
दवग्गी, दावग्गी < दवाग्निः	चाडू , चडू < चाटुः

(४०) घञ् को निमित्त मानकर जहाँ आ रूप वृद्धि हुई हो, उस आदि आकार का विकल्प से अत्व होता है।[२] जैसे–

पवहो, पवाहो < प्रवाहः पअरो, पआरो < प्रकारः
पत्थवो, पत्थावो < प्रस्तावः

अपवाद–कुछ घञन्त शब्दों में यह नियम लागू नहीं होता। जैसे–
राओ < रागः

(४१) मांस आदि शब्दों में अनुस्वार रहने पर आदि आकार का अत्व होता है।[३] जैसे–

---

१. वाव्ययोत्खातादावदातः ७।१।६७. अव्ययेषु उत्खातादिषु च शब्देषु आदेराकारस्य अद् वा भवति। हे.।

२. घञ् वृद्धेर्वा ८।१।६८. घञ् निमित्तो यो वृद्धिरूप आकारस्तस्यादिभूतस्य अद् वा भवति। हे.।

३. मांसादिष्वनुस्वारे ८।१।७०. मांसप्रकारेषु अनुस्वारे सति आदेरातः अद् भवति। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

मंसं < मांसम् पंसू < पांशुः
पंसणो < पांसनः कंसं < कांसम्
किंसिओ < कांसिकः वंसिओ < वांसिकः
संसिद्धिओ < सांसिद्धिकः संजत्तिओ < सांयात्रिकः

(४२) श्यामाक में मकार के आकार को अत् होता है।[१] यथा–

सामओ < श्यामाकः

(४३) महाराष्ट्र शब्द में आदि के आकार को अत् होता है।[२] यथा–

मरहट्ठं, मरहट्ठो < महाराष्ट्रः–यहाँ वर्ण विपर्यय भी हुआ है।

(४४) सदा आदि शब्दों में विकल्प से आकार के स्थान पर इकार आदेश होता है।[३] उदाहरण–

सइ, सआ < सदा–द्वितीय रूप विकल्पाभाव पक्ष का है।

तइ, तआ < तदा– ,, ,, ,,

जइ, जआ < यदा–य के स्थान पर ज होता है।

णिसिअरो, णिसाअरो < निशाचरः–द्वितीय रूप विकल्पाभाव का है।

(४५) यदि आर्या शब्द श्वश्रु (सास) के अर्थ में प्रयुक्त हो तो 'र्य' के पूर्ववर्ती आकार के स्थान में ऊ होता है।[४] जैसे–

अज्जू < आर्या–सास के अर्थ में; अज्जा < आर्या–श्रेष्ट अर्थ में

(४६) आचार्य शब्द में चकारोत्तरवर्ती आकार के स्थान पर इत्व और अत्व होता है।[५] यथा–

आइरिओ, आयरिओ < आचार्यः

(४७) स्त्यान और खल्वाट शब्द में आदि आकार के स्थान पर ईकार आदेश होता है।[६] जैसे–

ठीणं, थीणं, थिण्णं < स्त्यानम्–स्त के स्थान में थ और थ के स्थान में विकल्प ठ हुआ है।

खल्लीडो < खल्वाटः

---

१. श्यामाके मः ८।१।७१. श्यामाके मस्य आतः अद् भवति। हे.।

२. महाराष्ट्रे ८।१।६९. महाराष्ट्रशब्दे आदेराकारस्य अद् भवति। हे.।

३. इः सदादौ वा ८।१।७२. सदादिषु शब्देषु आत इत्वं वा भवति। हे.।

४. आर्यायां यः श्वश्र्वाम् ८।१।७७. आर्याशब्दे श्वश्रवां वाच्यायां यस्यात ऊर्भवति। हे.।

५. आचार्ये चोच्च ८।१।७३. आचार्यशब्दे चस्य आत इत्वं अत्वं च भवति। हे.।

६. ईः स्त्यान खल्वाटे ८।१।७४, स्त्यानखल्वाटयोरादेरात ईर्भवति। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(४८) आसार शब्द में आदि आकार के स्थान पर विकल्प से ऊद् होता है।[१] जैसे–

ऊसारो, आसारो < आसारः

(४९) द्वार शब्द में आकार के स्थान में विकल्प से एद् होता है।[२] यथा–

देरं, दुआरं, दारं, वारं < द्वारम्–प्रथम को छोड़, शेष विकल्पाभाव पक्ष के रूप हैं।

(५०) पारापत शब्द में रकारोत्तरवर्ती आकार के स्थान में एद् होता है।[३] यथा–

पारेवओ, पारावओ < पारापतः

(५१) आर्द्र शब्द में आदि के आत् के स्थान पर विकल्प से उकार और ओकार होते हैं।[४] यथा–

उल्लं, ओल्लं, अल्लं, अद्दं < आर्द्रम्–उत्तरवर्ती रूप विकल्पाभाव पक्ष के हैं।

(५२) आली शब्द में पंक्तिवाची अर्थ होने पर आकार को ओकार होता है।[५] जैसे–

ओली < आली, पंक्तिवाची अर्थ न होने पर आली–सखी ही रहता है।

(५३) संयोग से अव्यवहित पूर्ववर्ती दीर्घ का कभी–कभी ह्रस्व रूप हो जाता है।[६] यथा–

अंबं < आम्रम्	तंबं < ताम्रम्
विरहग्गी < विरहाग्निः	अस्सं < आस्यम्
मुनिंदो < मुनीन्द्रः	तित्थं < तीर्थम्
गुरुल्लावा < गरूल्लापा	चुण्णो < चूर्णः
नरिंदो < नरेन्द्रः	मिलिच्छो < म्लेच्छः
अहरुट्ठं < अधरोष्ठम्	नीलुप्पलं < नीलोत्पलम्

विशेष—संयोग नहीं रहने से आयासं, ईसरो, ऊसवो आदि शब्दों में उक्त नियम की प्रवृत्ति नहीं होती।

---

१. ऊद्वासारे ८।१।७६. आसारशब्दे आदेरात ऊद् वा भवति। हे.।

२. द्वारे वा ८।१।७९. द्वारशब्दे आत एद् वा भवति। हे.।

३. पारापते रो वा ८।१।८०. पारापतशब्दे रस्थस्यात एद् वा भवति। हे.।

४. उदोद्वार्द्रे ८।१।८२. आर्द्रशब्दे आदेरात ऊद् ओच्च वा भवतः। हे.।

५. ओदाल्यां पंक्तौ ८।१।८३. आलीशब्दे पंक्तिवाचिनि आत ओत्वं भवति। हे.।

६. ह्रस्वः संयोगे ८।१।८४. दीर्घस्य यथादर्शनं संयोगे परे ह्रस्वो भवति। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(५४) आदि इकार का संयोग के पर में रहने पर विकल्प से एकार होता है।[१] यथा–

पेण्डं, पिण्डं < पिण्डम्–द्वितीय रूप विकल्पाभाव पक्ष का है।
णेद्दा, णिद्दा < निद्रा– ,, ,,
सेंदूरं, सिंदूरं < सिन्दूरम्– ,, ,,
धम्मेलं, धम्मिलं < धम्मिलम्– ,, ,,
वेण्हू, विण्हू < विष्णुः– ,, ,,
पेट्ठं, पिट्ठं < पृष्ठम्– ,, ,,
चेण्हं, चिण्हं < चिह्नम्– ,, ,,
वेल्लं, विल्लं < विल्लम्– ,, ,,

विशेष—शौरसेनी में पिण्डादि शब्दों में एत्व नहीं होता। अतः पिण्डं, णिद्दा और धम्मिलं ये ही रूप पाये जाते हैं।

(५५) पथि, पृथिवी, प्रतिश्रुत्, मूषिक, हरिद्रा और विभीतक में आदि इकार के स्थान पर अकार होता है।[२] उदाहरण–

पहो < पथि
पुहई, पुढवी < पृथिवी–ह के स्थान पर ढ होने से पुढवी रूप बना है।
पडंसुआ < प्रतिश्रुत्
मूसओ < मूषिकः
हलद्दी, हलद्दा < हरिद्रा–हरिद्रा शब्द में रेफ का ल होता है।
बहेडओ < विभीतकः–'वि' की ई के स्थान पर अ हुआ है।

विशेष—कुछ वैयाकरणों के मत में हरिद्रा शब्द में ईकार के स्थान पर अकार नहीं होता हैं। अतः हलिद्दी, हलिद्दा ये रूप बनते हैं।

(५६) बदर शब्द में दकार सहित अकार के स्थान पर ओकार होता है।[३] यथा– बोरं < बदरम्–बदरोत्तर अकार और दकार के स्थान पर ओकार हुआ है।

(५७) लवण और नवमल्लिका शब्द में वकार सहित आदि अकार की ओकार होता हैं।[४] यथा–

लोणं < लवणं
णोमल्लिआ < नवमल्लिका

---

१. इत एद्वा ८।१।८५. आदेरिकारस्य संयोगे परे एकारो वा भवति। हे.।
२. पथि–पृथिवी–प्रतिश्रुन्मूषिक–हरिद्रा–विभीतकेष्वत् ८।१।८८। हे.।
३. ओ बदरे देन १।६. वर.।
४. लवणनवमल्लिकयोर्वेन १।७. वर.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(५८) मयूर और मयूख शब्द में 'यू' के सहित आदि वर्णस्थ अकार को विकल्प से ओकार होता है।[१] उदाहरण–

मोरो, मऊरो < मयूरः–यू सहित मकारोत्तर अकार को ओकार हुआ है। विकल्पाभाव पक्ष में यकार का लोप होने से मऊरो बना है।

मोहो, मऊहो < मयूखः– ,, ,,

(५९) चतुर्थी और चतुर्दशी शब्द में 'तु' सहित आदि अकार को विकल्प से ओकार होता है।[२] यथा–

चोत्थी, चउत्थी < चतुर्थी–तु सहित चकारोत्तर अकार को ओ हुआ है और रेफ का लोप होने से थ को द्वित्व तथा पूर्ववर्ती थ् को त् हुआ है।

चोद्दसी, चउद्दशी < चतुर्दशी–तु सहित चकारोत्तर अकार को ओ हुआ है और रेफ का लोप होने से द को द्वित्व हुआ है।

(६०) इक्षु और वृश्चिक शब्द के इकार को उकार होता है।[३] यथा–उच्छू < इक्षुः–क्ष के स्थान पर छादेश, छ को द्वित्व, पूर्ववर्ती छ् को च् किया है तथा इस सूत्र से इकार को उकार हुआ है।

विच्छुओ < वृश्चिकः–ऋकार को इकार, श्च के स्थान च्छ और इकार के स्थान पर उकार हुआ है।

(६१) जब इति शब्द किसी वाक्य के आदि में प्रयुक्त होता है, तब तकार वाले इकार का अकार हो जाता है।[४] जैसे–

इअ जं, पिआवसाणे < इति यावत् प्रियावसाने–इति के स्थान पर इअ हुआ है।

इअ विअसिअ कुसुमसरो < इति विकसितकुसुमशरः– ,, ,,

इअ उअह अण्णह वअणं < इति पश्यतान्यथा वचनम्–,, ,,

विशेष–इति शब्द के वाक्यादि में प्रयुक्त नहीं रहने पर अत्व नहीं होता। जैसे–पिओत्ति < प्रिय इति–वाक्य के आदि में इति शब्द के न आने से इअ नहीं हुआ, बल्कि इ का लोप होकर त् को द्वित्व हो गया है।

पुरिसोत्ति < पुरुष इति– ,, ,, ,,

(६२) जहाँ निर् के रेफ का लोप होता है, वहाँ नि के इकार का ईकार हो जाता है।[५] जैसे–

---

१. मयूरमयूखयोर्व्वा वा १/८, वर०

२. चतुर्थी चतुर्दशयोस्तुना १/९, वर०

३. उदिक्षुवृश्चिकयोः १/१५, वर०

४. इतौ तो वाक्यादौ ८/८/९१, हेम०

५. र्लुकि निरः ८/१/९३, निर् उपसर्गस्य रेफलोपे सति इत ईकारो भवति। हे०।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

णीसहो < निस्सहः–निर् के र् का लोप होने से नि, णि को दीर्घ हो गया है।
णीसासो < निःश्वासः– ,, ,, ,,

विशेष–रेफ का लोप नहीं होने पर ईकार नहीं होता। जैसे–
णिरओ < निरयः–रेफ का लोप न होने से णि को दीर्घ नहीं हुआ है।
णिस्सहो < निस्सहः– ,, ,, ,,

(६३) द्विशब्द और नि उपसर्ग के इकार का उ आदेश होता है। कहीं–कहीं यह नियम लागू भी नहीं होता और कहीं विकल्प से उत्व और ओत्व होता है।[१] उदाहरण–

दुवाई, दुवे < द्वौ–द्वि शब्द में नित्य उत्व हुआ है।
दुवअणं < द्विवचनम्– ,, ,,
दुअणो, दिउणो < द्विगुणः–विकल्प से उत्व होने पर दुअणो और विकल्पाभाव पक्ष में दिउणो।
दुइओ, दिउओ < द्वितीयः–विकल्पाभाव पक्ष में दिउओ बनता है।
दिओ < द्विजः–द्विशब्द के विषय में नियम की अप्रवृति।
दिरओ < द्विरदः– ,, ,,
दोवअणं < द्विवचनम्–द्वि शब्द को ओत्व हुआ है।
णुमज्जइ < निमज्जति–नि उपसर्ग के इकार को उत्व।
णुमण्णो < निमग्नः– ,, ,,
णिवडइ < निपतति–नि उपसर्ग के विषय में नियम की अप्रवृत्ति।

(६४) कृञ् धातु के प्रयोग में द्विधा शब्द के इकार का ओत्व और उत्व होता है।[२] जैसे–

दोहाकअं < द्विधा कृतम्–ओकार हुआ है।
दुहाकअं < द्विधा कृतम्–उकार हुआ है।
दोहा किज्जइ < द्विधा क्रियते–ओकार हुआ है।
दुहा–किज्जइ <द्विधा क्रियते–उकार हुआ है।

विशेष–कृञ् का प्रयोग नहीं रहने से दिहा–गमं < द्विधागतम् में यह नियम लागू नहीं होता। कहीं–कहीं केवल (कृञ् रहित) द्विधा में भी उत्व पाया जाता है। यथा–

---

१. द्विन्योरुत् ८।१।९४. द्विशब्दे नावुपसर्गे च इत उद् भवति। हे.।
२. ओच्च द्विधाकृगः ८।१।९७. द्विधाशब्दे कृग्धातोः प्रयोगे इत ओत्वं चकारादुत्वं च भवति। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

दुहा वि सो सुर–वहू–सत्थो = द्विधापि स सुरवधूसार्थः

(६५) पानीय गण के शब्दों में दीर्घ ईकार के स्थान में ह्रस्व इकार होता है।[१] जैसे–

पाणिअं < पानीयम्–	बहुल अधिकार होने से पाणीअं भी होता है।		
अलिअं < अलीकम्–	,,	,,	अलीअं भी होता है
जिअइ < जीवति–	,,	,,	जीअइ ,,
जिअउ < जीवतु–	,,	,,	जीअउ ,,
विलिअं < व्रीडितम्–	,,	,,	विलीअं ,,
करिसो < करीषः–	,,	,,	करीसो ,,
सिरिसो < शिरीषः–	,,	,,	सिरीसो ,,
दुइअं < द्वितीयम्–	,,	,,	दुईअं ,,
तइअं < तृतीयम्–	,,	,,	तईअं ,,
गहिरं < गभीरम्–	,,	,,	गहीरं ,,
उवणिअं < उपनीतम्–	,,	,,	उवणीअं ,,
आणिअं < आनीतम्–	,,	,,	आणीअं ,,
पलिविअं < प्रदीपितम्–	,,	,,	पलीविअं ,,
ओसिअन्तो < अवसीदन्–	,,	,,	ओसीअन्तो ,,
पसिअ < प्रसीद–	,,	,,	पसीअ ,,
गहिअं < गृहीतम्–	,,	,,	गहीअं ,,
वम्मिओ < वल्मीकः–	,,	,,	वम्मीओ ,,
तयाणिं < तदानीम्–	,,	,,	तयाणीं ,,

---

१. पानीयादिष्वित् ८।१।१०१. पानीयादिषु शब्देषु ईत इद् भवति। हे.।

'कल्पलतिका' के अनुसार पानीयगण में निम्नलिखित शब्द हैं–

पानीयव्रीडितालीकद्वितीयं च तृतीयकम्।
यथागृहीतमानीतं गम्भीरञ्च करीषवत्॥
इदानीं च तदानीं च पानीयादिगणो यथा।

'प्राकृत मञ्जरी' के अनुसार–पानीयव्रीडितालीकद्वितीयकरीषकाः।
गम्भीरञ्च तदानीञ्च पानीयादिरयं गणः॥

'प्राकृत प्रकाश' में उपनीत, आनीत, जीवति, जीवतु, प्रदीपित, प्रसीद, शिरीष, गृहीत, वल्मीक और अवसीदन् शब्दों का उल्लेख नहीं है।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(४६) जीर्ण शब्द में, ईकार और उकार दोनों होते हैं।[१] यथा–

जुण्णी, जिण्णो < जीर्णः

(६७) हीन और विहीन शब्दों में ईकार और ऊकार होते हैं।[२] जैसे–

हूणो, हीणो < हीनः; विहूणो, विहीणो < विहीनः

(६८) तीर्थ शब्द के ईकार का ऊकार तब होता है, जब कि उसके आगे का र्थ ह हो गया हो।[३] यथा–

तूहं < तीर्थम्–र्थ के स्थान में ह हुआ है और ईकार को ऊकार।

तित्थं < तीर्थम्–र्थ के स्थान में ह नहीं होने से ऊकार का अभाव है।

(६९) पीयूष, आपीड, विभीतक, कीदृश और ईदृश शब्दों में ईकार को एकार होता है।[४] जैसे–

पेऊसं < पीयूषम्

आमेलो < आपीडः–पकार को मकार और ईकार को एकार तथा ड को ल।

बहेडओ < विभीतकः–केरिसो < कीदृशः

एरिसो < ईदृशः

(७०) नीड और पीठ शब्दों में ईकार को विकल्प से एत्व होता है।[५] जैसे–

नेडं, नीडं < नीडम् पेढं, पीढं < पीठम्–ठ को ढ हुआ है।

(७१) मुकुलादिगण के शब्दों में आदि उकार के स्थान में अकार आदेश होता है।[६] जैसे–

मउलं < मुकुलम्–क का लोप होकर उकार शेष है।

गरुइ < गुर्वी–व् के स्थान पर उ हुआ है और र् तथा इ पृथक् हो गये हैं।

मउडं < मुकुटम् –क का लोप और ट के स्थान पर ड हुआ है।

जहुट्ठिलो, जहिट्ठिलो < युधिष्ठिरः–य के स्थान पर ज, इकार के स्थान पर उत्व।

---

१. उज्जीर्णे ८।१।१०२. जीर्णशब्दे इत उद् भवति। हे.।

२. ऊर्हीन–विहीने वा ८।१।१०३. अनयोरीत ऊत्वं वा भवति। हे.।

३. तीर्थे हे ८।१।१०४. तीर्थशब्दे हे सति ईत उत्वं भवति। हे.।

४. एत्पीयूषापीड–विभीतक–कीदृशेदृशे ८।१।१०५. एषु ईत एत्वं भवति। हे.।

५. नीड–पीठे वा ८।१।१०६. अनयोरीत एत्वं वा भवति। हे.।

६. उतो मुकुलादिष्वत् ८।१।१०७, मुकुल इत्येवमादिषु शब्देषु आदेरुतोत्वं भवति। हे.।
मुकुटं मुकुलं गुर्वी सुकुमारो युधिष्ठिरः।
अगुरूपरि शब्दौ च भुकुदादिरयं गणः। प्राकृतमंजरी।
प्राकृत प्रकाश में इसे मुकुटादिगण कहा है।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

सोअमल्लं < सौकुमार्यम्–र्य के स्थान पर ल, लकार का द्वित्व, क का लोप और शेष उकार के स्थान पर अ।

गलोई <गुडुची–गकारोत्तरवर्ती उकार के स्थान पर अ, ड के स्थान पर ल, उकार का ओ और च् का लोप।

विशेष—कहीं–कहीं प्रथम उकार का आकार भी होता है। यथा–

विद्वाओ < विद्रुतः–द्रु में से रेफ का लोप और द को द्वित्व तथा उकार को आ हुआ है।

(७२) यदि गुरु शब्द के आगे स्वार्थ में क प्रत्यय किया गया हो, तो उस गुरु शब्द के आदि उकार को विकल्प से अ आदेश होता है।[१] जैसे–

गरुओ, गुरुओ < गुरुकः

स्वार्थिक क के अभाव में गुरुओ (गुरुकः) होता है।

(७३) भ्रुकुटी शब्द में उकार के स्थान पर इकार होता है।[२] जैसे–

भिउडि < भ्रुकुटी–भ्रु के रेफ का लोप और उकार के स्थान पर इत्व, क का लोप तथा ट के स्थान पर ड।

(७४) पुरुष शब्द में रु के उकार को इत्व होता है।[३] जैसे–

पुरिसो < पुरुषः–रु के स्थान पर रि हुआ है।

पउरिसं < पौरुषम्– पौ के स्थान पर प + उ , रु के स्थान पर रि।

(७५) क्षुत शब्द में आदि के उकार को ईत्व होता है।[४] यथा–

छीअं < क्षुतम्–क्षु के स्थान पर छी और त का लोप।

(७६) सुभग और मुसल शब्दों में उकार को विकल्प से ऊत्व होता है।[५] यथा–

सूहओ, सुहओ < सुभगः–सु के स्थान पर सू, भ के स्थान पर ह ओर ग का लोप।

मूसलं, मुसलं < मुसलम्–विकल्पाभाव पक्ष में मुसलं।

(७७) उत्साह और उच्छन्न शब्दों को छोड़कर इसी प्रकार के अन्य शब्दों में त्स और च्छ के पर में रहने पर पूर्व के आदि उकार का दीर्घ ऊकार होता है।[६] जैसे–

---

१. गुरौ के वा ८।१।१०९.। हे.।

२. इर्भ्रुकुटौ ८।१।११०.। हे.।

३. पुरुषे रोः ८।१।१११.। हे.।

४. ईः क्षुते ८।१।११२.। हे.।

५. ऊत्सुभग–मुसले वा ८।१।११३.। हे.।

६. अनुत्साहोत्सन्ने त्सच्छे ८।१।११४.। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

ऊसुओ < उत्सुकः–उ के स्थान पर ऊ, त् का लोप तथा क का लोप और विसर्ग की ओत्व।

ऊसवो < उत्सवः– ,, ,, व का लोप और विसर्ग की ओत्व।

ऊसित्तो < उत्सिक्तः–उ के स्थान पर ऊ, त् का लोप और संयुक्त क्त में से क् का लोप तथा अवशेष त् को द्वित्व।

ऊच्छुओ < उच्छुकः–उ के स्थान में ऊत्व और क का लोप, विसर्ग को ओत्व।

विशेष—उच्छाहो < उत्साह–यहाँ दीर्घ ऊकार नहीं हुआ है।

उच्छण्णो < उच्छन्न– ,, ,, ,,

(७८) दुर् उपसर्ग के रेफ का लोप हो जाने पर ह्रस्व उ का दीर्घ ऊ विकल्प से होता है।[१] जैसे–

दूसहो, दुसओ < दुस्सहः–दूसरा रूप विकल्पाभाव पक्ष का है।

दूहओ, दुहओ < दुर्भगः– ,, ,,

(७९) संयुक्त अक्षरों के पर में रहने पर पूर्ववर्ती प्रथम उकार का ओकार होता है।[२] जैसे–

तोण्डं < तुण्डम्–उकार के स्थान पर ओकार हुआ है।

मोण्डं < मुण्डम्– ,, ,,

पोक्खरं < पुष्करम्–पु में रहने वाले उकार के स्थान पर ओकार तथा ष्क के स्थान पर क्ख।

कोट्टिमं < कुट्टिमम्–उकार के स्थान पर ओकार।

पोत्थअं < पुस्तकम्–उकार के स्थान पर ओकार तथा स्त के स्थान पर त्थ और क का लोप, शेष अ।

लोद्धओ < लुब्धकः–उकार के स्थान पर ओत्व, ब् का लोप और ध को द्वित्व।

मोत्ता < मुक्ता–उकार के स्थान पर ओकार, संयुक्त क् का लोप और त् को द्वित्व।

---

१. र्लुकि दुरो वा ८।१।११५.। हे.।

२. ओत्संयोगे ८।१।११५. हे.

तुण्डादिगण के शब्द–

तुण्डकुट्टिमकुद्दालमुक्तामुद्गरलुब्धकाः।
पुस्तकञ्चैवमन्येऽपि कुग्मीकुन्तलपुष्कराः॥ कल्पलतिका

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

वोक्कन्तं < व्युत्क्रान्तम्–व्यु के स्थान पर वो, त् और र् का लोप, क को द्वित्व।

कोन्तलो < कुन्तलः–उकार को ओकार।

पोग्गलं < पुद्गलम्–उकार को ओकार, द का लोप और ग की द्वित्व।

(८०) शब्द के आदि में ऋकार का अकार होता है।[१] जैसे–

घअं < घृतम्–घृ में रहने वाली ऋकार के स्थान पर अ और त का लोप होने से अ शेष।

तणं < तृणम्–तृ में रहने वाली ऋ के स्थान पर अ।

कअं < कृतम्–कृ में रहने वाली ऋ के स्थान पर अ तथा त का लोप, शेष अ।

वसहो < वृषभः– वृ की ऋकार के स्थान पर अ और भ के स्थान पर ह, विसर्ग का ओत्व।

मओ < मृगः–मृ की ऋ के स्थान पर अ और ग का लोप, अ शेष।

घट्ठो < घृष्टः–घृ की ऋ के स्थान पर अ और ष् का लोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय ट को ठ।

वड्ढी < वृद्धिः–वृ की ऋ के स्थान पर अ और द्धि के स्थान पर ड्ढी।

(८१) कृपादिगण के शब्दों में आदि ऋकार का इत्व होता है।[२] उदाहरण–

किवा < कृपा–कृ में रहने वाली ऋ के स्थान पर इ तथा पा के स्थान पर वा।

दिट्ठं < दृष्टम् दृ की ऋ के स्थान पर इ, संयुक्त ष् का लोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय ट के स्थान पर 'ठ'।

सिट्ठी < सृष्टिः–सृ की ऋ के स्थान पर इ, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व और द्वितीय ट के स्थान पर ठ।

भिऊ < भृगुः–भृ की ऋ के स्थान पर इ तथा ग का लोप, उ शेष।

सिंगारो < शृंगारः–शृ की ऋ के स्थान पर इ।

घुसिणं < घुसृणम् –सृ की ऋ के स्थान पर इ।

इड्ढी < ऋद्धिः–ऋ के स्थान पर इ, द्धि के स्थान पर ड्ढी।

किसाणू < कृशानुः–कृ की ऋ के स्थान पर इ।

किई < कृतिः–कृ की ऋ के स्थान पर इ, त् का लोप और ई शेष।

किवणो < कृपणः–कृ की ऋ के स्थान पर इ और प के स्थान पर व।

---

१. ऋतोत् ८/१।१२६. आदेर्ऋकारस्य अत्वं भवति। हे.।

२. इत्कृपादौ ८।१।१२८. कृपा इत्यादिषु शब्देषु आदेर्ऋत इत्वं भवति।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

भिंगारो < भृंगारः–भृ की ऋ के स्थान पर इ।

किसो < कृशः–कृ की ऋ के स्थान पर इ।

विञ्चुओ < वृश्चिकः–वृ की ऋ के स्थान पर इ और श्च के स्थान पर ञ्च तथा इकार को उकार।

विंहिओ < वृंहितः–वृ की ऋ के स्थान पर वि।

तिप्पं < तृप्तम्–तृ की ऋ के स्थान पर इ, त का लोप और प को द्वित्व।

किच्चं < कृत्यम्–कृ की ऋ के स्थान पर इ और त्य के स्थान पर च्च।

हिअं < हृतम्–हृ की ऋ के स्थान पर इ, त का लोप तथा अ स्वर शेष।

वित्तं < वृत्तम्–वृ की ऋ के स्थान पर इकार।

वित्ती < वृत्तिः–वृ की ऋ के स्थान पर इकार और त्ति को दीर्घादेश।

विसी < वृषिः–वृ की ऋ के स्थान पर इकार और षि को दीर्घ तथा दन्त्य।

सइ< सकृत्–कृ की ऋ के स्थान पर इ तथा अन्तिम हलन्त व्यंजन त् का लोप।

हिअअं < हृदयम्–हृ की ऋ के स्थान पर इकार, द और य का लोप और स्वर शेष।

दिट्ठी < दृष्टिः–दृ की ऋ के स्थान पर इत्व तथा संयुक्त ष का लोप और ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ।

गिट्ठी < गृष्टिः–गृ की ,, ,, ,,

भिंगो < भृंगः–भृ की ऋ के स्थान पर इकार।

सियालो <शृगालः–शृ की ऋ के स्थान पर इत्व, ग का लोप और स्वर शेष।

विड्ढी < वृद्धिः–वृ की ऋ के स्थान पर इकार, दन्त्य के स्थान पर मूर्धन्य वर्ण और दीर्घ।

घिणा < घृणा–घृ की ऋ के स्थान पर इकार।

किच्छं < कृच्छ्रम्–कृ की ऋ के स्थान पर इकार।

निवो < नृपः–नृ की ऋ के स्थान पर इकार और प को व।

विहा < स्पृहा–संयुक्त स् को लोप, पृ की ऋ के स्थान पर इ और प को व।

गिड्ढी < गृद्धिः–गृ की ऋ के स्थान पर इ और दन्त्य वर्णों का मूर्धन्य।

किसरो < कृशरः–कृ की ऋ के स्थान पर इ।

धिई < धृतिः–धृ की ऋ के स्थान पर इ, तकार का लोप और स्वर शेष।

किवाणं < कृपाणम्–कृ की ऋ के स्थान पर इ और त का लोप, स्वर शेष।

वाहित्तं < व्याहृतम्–व्या के स्थान पर वा, हृ की ऋ के स्थान पर इकार।

इसी < ऋषिः–ऋ के स्थान पर इ और षि के स्थान पर दीर्घ सी।

वितिण्हो < वितृष्णः–तृ की ऋ के स्थान पर इ और ष्ण के स्थान पर ण्ह।

मिट्ठं < मृष्टम–मृ की ऋ के स्थान पर इकार।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

सिट्ठं < सृष्टम्–सृ की ऋ के स्थान पर इ तथा संयुक्त सकार का लोप, ट को द्वित्व।

पित्थी < पृथ्वी–पृ की ऋ के स्थान पर इ तथा थ्वी के स्थान पर त्थी।

समिद्धी < समृद्धिः–मृ की ऋ के स्थान पर इकार और ह्रस्व को दीर्घ।

किवो < कृपः–कृ की ऋ के स्थान पर इ और प का व।

उक्किट्ठं < उत्कृष्टम्–कृ की ऋ के स्थान पर इत्व, त् का लोप और क् को द्वित्व, ष् का लोप, ट को द्वित्व और द्वितीय ट् को ठ।

विकल्प से इत्व–

विसो, वसो < वृषः

किण्हो, कण्हो < कृष्णः

महिविट्ठं < महीपृष्ठम्–यहाँ उत्तरपद रहने से पृष्ठ शब्द में विकल्प से इत्व नहीं हुआ।

(८२) ऋतु प्रभृति शब्दों में आदि ऋकार को उकार होता है। उदाहरण[१]–

उदू < ऋतुः–ऋकार के स्थान पर उ और त के स्थान पर द।

पउत्ती < प्रवृत्तिः–प्र के स्थान पर प, व का लोप और ऋ के स्थान पर उ तथा त्ति की दीर्घ।

परामुट्ठो < परामृष्टः–मृ की ऋ के स्थान पर उकार, ष् का लोप, ट को द्वित्व और द्वितीय ट् को ठ।

पाउसो < प्रावृट्–प्र का प, व का लोप, ऋ के स्थान पर उ और ट् को स

परहुओ < परभृतः–भृ की ऋ के स्थान पर उत्व, भ के स्थान पर ह।

णिव्वुअं, णिव्वुदं < निर्वृतम्–रेफ का लोप, व को द्वित्व, ऋ के स्थान पर उ, त का लोप और स्वरशेष।

उसहो < ऋषभः–ऋ के स्थान पर उ और भ के स्थान पर ह।

भाउओ < भ्रातृकः–भ्रा में से रेफ का लोप, तृ में त का लोप, ऋ के स्थान पर उ।

पहुदि < प्रभृति–प्र का प, भृ के स्थान पर हु और त के स्थान पर द।

संवुदं < संवृत्तम्–वृ की ऋ के स्थान पर उ तथा त की द।

वुड्ढो < वृद्धः–वृ की ऋ के स्थान पर उ तथा दन्त्यवर्णों को मूर्धन्य।

मुडालं < मृणालम्–मृ की ऋ के स्थान पर उ तथा ण के स्थान पर ड।

पाहुडं< प्राभृतम्–प्र के स्थान पर प, भृ के स्थान पर हु और त के स्थान पर ड।

---

१. उदृत्वादौ ८।१।१३१. ऋतु इत्यादिषु शब्देषु आदेर्ऋत उद् भवति। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

पुट्ठं < पृष्टम्–पृ की ऋ के स्थान पर उ, ष् का लोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय ट को ठ।

पुहइ, पुहवी < पृथिवी–पृ की ऋ के स्थान पर उ और थ के स्थान पर ह।

पाउअं < प्रावृतम्–प्रा के स्थान पर पा, वृ के व का लोप, ऋ के स्थान पर उ, त का लोप तथा विसर्ग को ओत्व।

भुई < भृतिः–भृ की ऋ के स्थान पर उ तथा तकार का लोप।

विउअं < विवृतम्–वृ के व का लोप, इसी के ऋ के स्थान पर उत्व।

वुंदावणं < वृन्दावनम्–वृ के ऋ के स्थान वर उत्व।

जामाउओ, जामादुओ < जामातृकः–तृ के तकार का लोप, ऋ के स्थान पर उ और क का लोप तथा स्वरशेष।

पिउओ < पितृकः–तृ के त का लोप, ऋ के स्थान पर उ और क का लोप, तथा ओत्व।

णिहुअं, णिहुदं < निभृतम्–भृ में भ के स्थान पर ह और ऋ के स्थान पर उ।

णिव्वुइ < निर्वृतिः–र्वृ में से रेफ का लोप, ऋ को उत्व तथा व को द्वित्व।

वुड्ढी < वृद्धिः–वृ के ऋ के स्थान पर उत्व और दन्त्य वर्णों को मूर्धन्य।

माउआ < मातृका–तृ के त का लोप, ऋ के स्थान पर उ और क का लोप, स्वरशेष।

णिउअं < निवृतम् = वृ के व का लोप, ऋ का उत्व तथा त का लोप, स्वरशेष।

वुत्तान्तो < वृत्तान्तः–ऋ का उत्व।

उजू < ऋजुः–ऋ का उत्व।

पुहुवी < पृथिवी–पृ में ऋ के स्थान पर उत्व, थ का को ह आदेश।

वुंदं < वृन्दम्–वृ के ऋ के स्थान पर उत्व।

माऊ, मादु < मातृ–तृ में से तकार का लोप, ऋ के स्थान पर उत्व। तकार का लोप न होने पर द।

(८३) निवृत्त और वृन्दारक शब्द में ऋ के स्थान पर विक्ल्प से उत्व होता है।[१] यथा–

निवुत्तं, निअन्तं < निवृत्तम्–विकल्पाभाव पक्ष में ऋ के स्थान पर अ हुआ है।

वुन्दारया, वन्दारया < वृन्दारका– ,, ,,

(८४) वृषभ शब्द में ऋ के स्थान पर विकल्प से वकार सहित उत्व होता है।[२] यथा–

उसहो, वसहो=वृषभः–विकल्पाभाव पक्ष में ऋ के स्थान में अ हुआ है।

---

१. निवृत्त–वृन्दारके वा ८।१।१३२.। हे.। २. वृषभे वा वा ८।१।१३३.। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(८५) समास आदि में जो पद प्रधान न होकर गौण होता है, उसके अन्तिम ऋ के स्थान में उकार आदेश होता है।[१] जैसे–

माउमंडलं, मादुमंडलं < मातृमण्डलम्–तकार का लोप न होने पर त का द हुआ है और ऋ के स्थान पर उकार।

माउहरं, मादुहरं < मातृगृहम् ,, ,,

पाउवणं < पितृवनम्–तकार का लोप और अ के स्थान पर उकार।

(८६) गौण–अप्रधान मातृशब्द के ऋकार को विकल्प से इकार होता है[२]। जैसे–

माइ–हरं, माउ–हरं < मातृगृहम्

माइ–मंडलं, माउ–मंडलं, मादु–मंडलं < मातृमंडलम्

(८७) मृषा शब्द में ऋकार के स्थान पर उत्, ऊत् और ओत् होते हैं।[३] जैसे–

मुसा, मूसा, मोसा < मृषा

मुसा–वाओ, मूसा–वाओ, मोसा–वाओ < मृषावादः

(८८) वृष्ट, वृष्टि, पृथक्, मृदङ्ग और नप्तृक शब्दों में ऋकार के स्थान पर इकार और उकार होते हैं।[४] जैसे–

विट्ठो, वुट्ठो < वृष्टः विट्ठी, वुट्ठी < वृष्टिः

पिहं, पुहं < पृथक् मिइंगो, मुइंगो < मृदङ्गः

नत्तिओ, नत्तुओ < नप्तृकः

(८९) वृहस्पति शब्द में ऋकार के स्थान पर विकल्प से इकार और उकार होते हैं।[५] जैसे–

विहप्फई, बुहप्फइ, वहप्फई < वृहस्पतिः

(९०) वृन्त शब्द में ऋकार के स्थान पर इत्, एत् और ओत् होते हैं।[६] जैसे–

विण्टं, वेण्टं, वोण्टं < वृन्तम्

(९१) व्यञ्जन के सम्पर्क रहित–केवल ऋ के स्थान पर रि आदेश होता है। यह कहीं विकल्प से और कहीं नित्य होता है।[७] जैसे–

रिद्धी < ऋद्धिः रिणं < ऋणम्

रिज्जू, उज्जू < ऋजुः रिसहो, उसहो < वृषभः

---

१. गौणान्त्यस्य ८।१।१३४.। हे.। २. मातुरिद्वा ८।१।१३५.। हे.।

३. उदूदोन्मृषि ८।१।१३६.। हे.।

४. इदुतौ वृष्ट–वृष्टि–पृथङ्–मृदङ्ग–नप्तृके ८।१।१३७.। हे.।

५. वा बृहस्पतौ ८।१।१३८.। हे.। ६. इदेदोद्वृन्ते ८।१।१३९.। हे.।

७. रिः केवलस्य ८।२।१४०.। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

रिऊ, उदू < ऋतुः रिसी, इसी = ऋषिः

(९२) जिस दृश् धातु के आगे कृत्, क्विप, स्क् और सक् प्रत्यय आये हों, उसके ऋ का रि आदेश होता है।[१] जैसे–

एआरिसो < एतादृशः–त् का लोप स्वर शेष, द् का लोप और ऋ के स्थान पर 'रि'।

तारिसो < तादृशः–दृ में से द् का लोप और ऋ के स्थान पर रि।

सरिसो < सदृशः– ,, ,, ,, ,,

सरिच्छो < सदृक्षः ,, ,, क्ष के स्थान पर च्छ।

भवारिसो < भवादृशः– द् का लोप और ऋ के स्थान पर रि।

जारिसो < यादृशः– ,, ,, ,, ,,

केरिसो<कीदृशः–की के स्थान पर के और द् का लोप, ऋ के स्थान पर रि।

अम्हारिच्छो <अस्मादृक्षः–द् का लोप, ऋ के स्थान पर 'रि', क्ष के स्थान पर च्छ।

अन्नारिसो < अन्यादृशः–न्या के स्थान पर न्ना, द् का लोप, ऋ के स्थान पर 'रि'।

अम्हारिसो < अस्मादृशः–स्मा के स्थान पर म्हा, द् का लोप, ऋ के स्थान पर रि।

तुम्हारिसो < युष्मादृशः–ष्मा के स्थान पर म्हा, द् का लोप, ऋ के स्थान पर रि।

विशेष—शौरसेनी में उक्त शब्दों के रूप निम्नप्रकार होते हैं।

	जादिसं < यादृशम्	तादिसं < तादृशम्
पैशाची में–	जातिसं < यादृशम्	तातिसं < तादृशम्
अपभ्रंश में–	जइसं < यादृशम्	तइसं < तादृशम्

(९३) किसी भी शब्द में आदि ऐकार का एकार होता है।[२] यथा–

सेलो = शैलः–श के स्थान पर स और ऐकार को एकार।

तेल्लुकं, तेल्लोकं < त्रैलोक्यम्–त्रै में से र् का लोप, ऐकार को एकार, च् का लोप और क को द्वित्व।

सेच्चं < शैत्यम्–ऐकार का एकार, त्य के स्थान पर च्च।

एरावणो < ऐरावतः–ऐकार का एकार और त के स्थान पर ण।

---

१. दृशः क्वि प्–टक्सकः ८।१।१४२.। हे.। २. ऐत् एत् ८।१।१४८.। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

केलासो < कैलाशः–ऐकार का एकार।

केढवो < कैतवः–ऐकार का एकार और त के स्थान पर ढ।

वेहव्वं < वैधव्यम्–ऐकार का एकार, ध के स्थान पर ह, और य लोप तथा व् को द्वित्व।

(९४) दैत्यादि गण में ऐ के स्थान में अइ आदेश होता है। यह नियम ए का अपवाद है।[१] जैसे–

दइच्चं < दैत्यम्–ऐ के स्थान पर अइ, त्य के स्थान पर च्च।

दइण्णं < दैन्यम्– ,, ,, न्य के स्थान पर ण्ण।

अइसरिअं < ऐश्वर्यम्– ,, ,, व का लोप और र्यम् का रिअं।

भइरवो < भैरवः–ऐकार का अइकार

दइवअं < दैवतम्–ऐकार का अइकार, त लोप ओर स्वरशेष।

वइआलीओ < वैतालिकः–ऐकार का अइकार, त लोप, स्वर शेष तथा क लोप और स्वर शेष।

वइएसो < वैदेशः–ऐकार का अइ, द लोप और स्वर शेष।

वइएहो < वैदेहः– ,, ,, ,,

वइअब्भो < वैदर्भः–ऐकार का अइ, द लोप, स्वर शेष, रेफलोप और भ को द्वित्व, पूर्ववर्ती भ को ब।

वइस्साणरो < वैश्वानरः–ऐकार का अइ, व लोप, स को द्वित्व, न को ण।

कइअवं < कैतवम्–ऐकार का अइ, त लोप, स्वर शेष।

वइसाहो < वैशाखः–ऐकार का अइ, ख के स्थान में ह।

वइसालो < वैशालः–ऐकार का अइ।

(९५) वैरादिगण में ऐकार के स्थान में विकल्प से अइ आदेश होता है।[२] यथा–

वइरं, वेरं < वैरम्–ऐकार के स्थान पर अइ, विकल्पाभाव में ए।

कइलासो, केलासो < कैलाशः– ,, ,,

कइरवं, केरवं < कैरवम्– ,, ,,

---

१. अइर्दैत्यादौ च ८।१।१५१. हे.। दैत्यादि गण के शब्द–

दैत्यादौ वैश्यवैशाखवैशम्पायनकैतवाः।

स्वैरवैदेहवैदेशक्षैत्रवैषयिका अपि।

दैत्यादिष्वपि विज्ञेयास्तथा वैदेशिकादयः॥–कल्पलतिका

२. वैरादौ वा ८।१।१५२. हे.। वैरादिगण के शब्द–

दैत्यः स्वैरं चैत्यं कैटभवैदेहको च वैशाख।

वैशिकभैरववैशम्पायनवैदेशिकाश्च दैत्यादिः॥–प्राकृत मंजरी।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

वइसवणो, वेसवणो < वैश्रवणः–ऐकार के स्थान पर अइ, श्र के र का लोप, अभाव पक्ष में ए।

वइसंपाअणो, वेसंपाअणो < वैशम्पायनः–,, ,, य लोप और स्वरशेष।

वइआलिओ, वेआलिओ < वैतालिकः– ,, ,, क का लोप और स्वरशेष।

वइसिओ, वेसिओ < वैशिकः– ,, ,, ,,

चइत्तो, चेत्तो = चैत्रः– ,, ,, त्र के र का लोप और त को द्वित्व।

(९६) शब्द के आदि औकार को ओकार आदेश होता है।[१] जैसे–

कोमुई < कौमुदी–औ के स्थान पर ओकार, द लोप और स्वरशेष।

जोव्वणं < यौवनम्–य के स्थान पर ज, औ का ओ और व को द्वित्व।

कोत्थुहो < कौस्तुभः–औकार का ओ, स्तु के स्थान पर त्थु और भ के स्थान पर ह।

सोहग्गं < सौभाग्यम्–औकार का ओ, भ के स्थान पर ह, य् लोप और ग को द्वित्व।

दोहग्गं < दौर्भाग्यम्– ,, ,, ,,

गोदमो < गौतमः–औकार का ओ और त का द।

कोसंबी < कौशाम्बी–औकार का ओ हुआ है।

कोंचो < क्रौञ्चः– ,, ,,

कोसिओ < कौशिकः– ,, ,, और क का लोप तथा स्वर शेष।

(९७) सौन्दर्यादिगण के शब्दों में औ के स्थान पर उत् आदेश होता है।[२] यथा–

सुन्देरं, सुंदरिअं < सौन्दर्यम्–औ के स्थान पर उ होने से।

सुंडो < शौण्डः–औ के स्थान पर उत् आदेश।

दुवारिओ < दौवारिकः–औ के स्थान पर उत् और क का लोप, स्वर शेष।

मुंजायणो < मौञ्जायनः–औ के स्थान पर उत् आदेश।

सुगंधत्तणं < सौगन्ध्यम्–औ के स्थान पर उत् आदेश।

पुलोमी < पौलोमी– ,, ,,

सुवण्णिओ < सौवर्णिकः– ,, ,,

---

१. औत ओत ८।१।१५९.। हे.।

२. उत्सौन्दर्यादौ ८।१।१६०.। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(९८) कौक्षेयक और पौरादिगण के शब्दों में औ के स्थान पर अउ आदेश होता है।[१] यथा–

कउक्खेअओ, कुक्खेअओ < कौक्षेयकः।

पउरो < पौरः	कउरवो < कौरवः
पउरिसं < पौरुषम्	सउहं < सौधम्
गउडो < गौडः	मउली < मौलिः
मउणं < मौनम्	सउरा < सौराः
कउला < कौलाः	

(९९) अव और अप उपसर्गों के आदि स्वर का आगे वाले सस्वर व्यंजन के साथ विकल्प से ओत् होता है।[२] जैसे–

ओआसो, अवआसो < अवकाशः–अव के स्थान पर ओ और क का लोप, स्वर शेष।

ओसरइ, अवसरइ < अपसरति–अप के स्थान पर ओ, त का लोप और स्वर शेष।

ओहणं, अअहणं< अपघनम्–अप के स्थान पर ओ तथा घ के स्थान पर ह।

विशेष–निम्न रूपों में यह नियम लागू नहीं होता–

अवगअं < अपगतम्–प के स्थान पर व।

अवसदो < अपसदः– ,, ,,

(१००) आगे वाले सस्वर व्यञ्जन के साथ उप के आदि स्वर के स्थान में विकल्प से ऊत और ओत् आदेश होते हैं।[३] जैसे–

ऊहसिअं, ओहसिअं < उपहसितम्–उप के स्थान पर ऊ और ओ हुआ है।

ऊआसो, ओआसो < उपवासः–उप के स्थान पर ऊ और ओ, व को लोप और स्वर शेष।

इन सामान्य स्वरविकृति नियमों के पश्चात् व्यञ्जनविकृति के नियमों का निर्देश किया जाता है–

(१०१) स्वर से पर में रहने वाले अनादिभूत तथा दूसरे किसी व्यञ्जन से

---

१. अउः पौरादौ च ८।१।१६२. हे.।
सौन्दर्यादिगण के शब्द–
सौन्दर्य शौण्डिको दौवारिकः शौण्डोपरिष्टकम्।
कौक्षेयः पौरुषः पौलोमि मौञ्जदौस्याधिकादयः॥ –कल्पलतिका।
पौरादिगण के शब्द–
पौरपौरुषशैलानि, गौडक्षौरितकौरवाः।
कौशल मौलिवौचित्यं, पौराकृतिगणा मता॥ –कल्पलतिका।

२. अवापोते ८।१।१७२. हे.। ३. ऊच्चोपे ८।१।१७३. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

संयोगरहित क, ग, च, ज, त, द, प, य और व वर्णों का प्रायः लोप होता है।[१]
उदाहरण–
क लोप–

लोओ < लोकः–क का लोप, स्वर शेष और विसर्ग की ओत्व।
सअढं < शकटम्–क का लोप, स्वर शेष और ट के स्थान पर ढ।
मउलं < मुकुलं–मु के उ के स्थान पर अ, क का लोप और उ स्वर शेष।
णउलो < नकुलः–न का ण और क का लोप, स्वरशेष।
णोआ < नौका–न का ण और औ का ओ तथा क का लोप, स्वरशेष।
तित्थयरो < तीर्थंकरः–ती को ह्रस्व, रेफ का लोप, थ को द्वित्व, क लोप और स्वरशेष, य श्रुति।

ग लोप–

णओ < नगः–ग लोप, स्वरशेष।
णअरं, नयरं, णयरं < नगरम्–ग लोप और शेष स्वर के स्थान में य श्रुति।
मयंको < मृगाङ्कः–मृ का म, ग का लोप और शेष स्वर को य श्रुति।
साअरो, सायरो < सागरः–ग लोप और शेष स्वर को य श्रुति।
भाइरही < भागीरथी–ग लोप, स्वर शेष और थ के स्थान पर ह।

च लोप–

सई < शची–श को स और चकार का लोप, स्वर शेष।
कअग्गहो, कयग्गहो < कचगृहः–च लोप, शेष स्वर को य श्रुति।
सूई < सूची–च लोप और स्वर शेष।
रोअदि < रोचते–च लोप और स्वर शेष।
उइदं < उचितम्–च लोप और स्वर शेष, त को द।
सूअअं < सूचकम्।

ज लोप–

रअओ < रजकः–ज और क दोनों का लोप और स्वर शेष।
पआवई < प्रजापतिः–ज लोप, स्वर शेष और प के स्थान पर व।
गओ < गजः–ज लोप और स्वर शेष।
रअढं < रजतम्–ज का लोप, स्वर शेष और त के स्थान पर ढ।

त लोप–

विआणं < वितानम्–त लोप और स्वर शेष।
किअं <कृतम्–कृ में रहने वाली ऋ के स्थान पर अ और त लोप, स्वर शेष।
रसाअलं < रसातलम्–त लोप और स्वर शेष।

---

१. क-ग-च-ज-त-द-प-य-वां प्रायो लुक् ८।१।१७७. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

रअणं, रयणं < रत्नम्–त लोप और स्वर शेष, स्वर शेष के स्थान में य श्रुति।

द लोप–

जइ < यदि–य को ज और द लोप।
नई < नदी–द लोप और स्वर शेष।
गआ < गदा– ,, ,,
मअणो < मदनः– ,, ,,
वअणं < वदनम्– ,, ,,
मओ < मदः– ,, ,,

प लोप–

रिऊ < रिपुः–प लोप और उ शेष तथा उकार को दीर्घ।
सुउरिसो < सुपुरुषः– ,, ,, ,,
कई < कपिः–प लोप और स्वर शेष।
विउलं < विपुलं– ,, ,,

य लोप–

दआलू < दयालुः–य लोप, स्वर शेष और लु को दीर्घ।
णअणं < नयनम्– ,, ,, ,,
विओओ < वियोगः –य और ग का लोप स्वर शेष।
वाउणा < वायुना–य लोप और स्वर शेष।

व लोप–

जीओ < जीवः–व लोप और स्वर शेष।
दिअहो < दिवसः–व लोप, स्वर शेष और स के स्थान पर ह।
लाअण्णं < लावण्यम्–व लोप स्वर शेष, य लोप और ण को द्वित्व।
विओहो < विवोधः–व लोप, स्वर शेष और ध के स्थान पर ह।
वडआणलो < वडवानलः–व लोप, स्वर शेष।

विशेष—प्रायः शब्द का प्रयोग होने से कहीं–कहीं लोप नहीं होता। यथा–

सुकुसुमं < सुकुसुमम्
पयागजलं < प्रथागजलम्
पियगमणं < प्रियगमनम्
सुगओ < सुगतः
अगरु < अगरु
सचावं < सचापम्
समवाओ < समवायः

(क) स्वर से पर में नहीं रहने के कारण उक्त वर्णों का लोप नहीं हुआ–

संकरो < शंकरः
णक्कंचरो < नक्तंचरः
धणंजओ < धनञ्जयः
पुरंदरो < पुरन्दरः
संवरो < संवरः

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(ख) निम्न शब्दों में संयुक्त होने के कारण लोप नहीं हुआ–

अक्को < अर्कः　　वग्गो < वर्गः

अग्घो < अर्घः　　मग्गो < मार्गः

(ग) निम्न शब्दों में आद्यक्षर होने के कारण उक्त वर्णों का लोप नहीं हुआ–

कालो < कालः　　गंधो < गन्धः

चोरो < चौरः–औकार के स्थान पर ओकार।

जारो < जारः

तरू < तरुः–रु के ह्रस्व उकार को दीर्घ हुआ है।

दवो < दवः

पावं < पापम्–द्वितीय प के स्थान पर व हुआ है।

(घ) समास में उत्तरपद के आदि का विकल्प से लोप होता है–

सहअरो, सहचरो < सहचरः

जलअरो, जलचरो < जलचरः

सहआरो, सहकारो < सहकारः

(ङ) कुछ विद्वानों के मत में क का लोप नहीं होता, बल्कि उसके स्थान पर ग होता है। जैसे–

एगत्तणं < एकत्वम्　　एगो < एकः

अमुगो < अमुकः　　आगारो < आकारः

आगरिसो < आकर्षः

(च) कहीं कहीं आदि में आने वाले कादि वर्णों का भी लोप देखा जाता है–

स उण < स पुनः

सो य, सोअ < स च–च का लोप होने पर शेष स्वर अ के स्थान में य श्रुति होने से च का य होता है।

इन्धं < चिह्नम्–आदि च का लोप ओर ह के स्थान पर ध।

(छ) आर्ष प्राकृत में च के स्थान पर ट पाया जाता है। यथा–

आउण्टणं < आकुञ्चनम्

(१०२) क, ग, च, ज, त, द, प, य और व का लोप होने पर अवशिष्ट स्वर अ या आ के स्थान में लघु प्रयत्नतर यकार का उच्चारण होता हैं।[१] यथा–

नयरं < नगरम्–ग का लोप होने पर अवशेष अ के स्थान पर य।

कयग्गहो < कचग्रहः–च का लोप होने पर अवशेष अ के स्थान पर य।

कायमणी < काचमणिः–　　,,　　,,　　,,

रययं<रजतम् –ज और त का लोप होने पर अवशेष स्वर अ के स्थान में य।

---

१. अवर्णो यश्रुतिः ८।१।१८०. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

पयावई < प्रजापतिः–ज का लोप और अवशेष आ के स्थान में या, प का व और त का लोप, दीर्घ।

रसायलं < रसातलम्–त का लोप और अवशेष अ को य।

पायालं < पातालम्–त का लोप और अवशेष आ को या।

(१०३) असवर्ण से पर में अनादि प का लोप लुक् नहीं होता, बल्कि पकार को वकार होता है।[१] उदाहरण–

उवसग्गो < उपसर्गः–प का व, रेफ का लोप और ग को द्वित्व।

कवालो < कपालः–यहाँ प का लोप नहीं हुआ, उसके स्थान पर व हुआ है।

उल्लावो < उल्लापः– ,, ,,

कवोलो < कपोलः– ,, ,,

महिवालो < महिपालः– ,, ,,

उवमा < उपमा– ,, ,,

पावं < पापम्–प का व हुआ है।

सवहो < शपथः–प का व तथा थ का ह हुआ है।

सावो < शापः–प का व हुआ है।

विशेष–(क) संयुक्त होने पर प का व नहीं होता। यथा–

विप्पो < विप्रः–प्र में प् + र् + अ का संयोग है अतः रेफ का लोप और प को द्वित्व।

सप्पो < सर्पः–रेफ का लोप और प को द्वित्व।

(ख) आदिस्थ होने पर प का न तो लोप होता है और न उसके स्थान में व ही होता है। यथा–

पई < पतिः–त का लोप तथा इकार को दीर्घ।

पंडिओ < पण्डितः–त का लोप और विसर्ग को ओत्व।

(१०४) आपीड शब्द में पकार को म होता है।[२] यथा–

आमेलो < आपीडः–प का म और ड को ल हुआ है।

(१०५) स्वर से पर में रहने वाले असंयुक्त और अनादि ख, घ, थ, ध और भ वर्णों के स्थान में प्रायः ह आदेश होता है।[३] वास्तविकता यह है कि इन व्यंजनों में ह संयुक्त है। जैसे–

ख् = क् + ह, घ = ग् +ह, थ् = त् + ह, ध = द् + ह, फ = प् + ह, भ् = ब् + ह। अतः उक्त व्यञ्जनों में विजातीय का लोप होकर ह शेष रह जाता है। उदाहरण–

---

१. पो वः २।१५. वर.। २. आपीडे मः २।१६. वर.।

३. ख–घ–थ–ध–भाम् ८। १।१८७. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

मुहं < मुखम्–ख का ह हुआ है।
महो < मखः–ख का ह हुआ है।
मेहला < मेखला–,, ,,
लिहइ < लिखति–,, ,, और त् का लोप तथा इ शेष।
पमुहेण < प्रमुखेण–प्र के स्थान पर प और ख का ह हुआ है।
सही < सखी–ख के स्थान पर ह।
अलिहिदा < अलिखिता–ख के स्थान पर ह और त के स्थान पर द।
मेहो < मेघः–घ के स्थान पर ह हुआ है।
जहणं < जघनम्– ,, ,,
माहो < माघः– ,, ,,
लाहअं < लाघवम्–घ के स्थान पर ह और व का लोप तथा स्वर अ शेष।
लहु < लघुः–घ के स्थान पर ह।
नाहो < नाथः–थ के स्थान पर ह।
गाहा < गाथा– ,, ,,
मिहुणं < मिथुनम्– ,, ,,
सवहो < शपथः–प के स्थान पर व और थ के स्थान पर ह।
कहेहि < कथय–थ के स्थान पर ह।
कहं < कथम्– ,, ,,
मणोरहो < मनोरथः– ,, ,,
साहू < साधुः–ध के स्थान पर ह।
राहा < राधा– ,, ,,
वाहा < बाधा– ,, ,,
वहिरो < बधिरः– ,, ,,
वाहइ < बाधते–ध के स्थान पर ह और विभक्ति चिह्न इ।
इंदहणू < इन्द्रधनुः–रेफ का लोप और ध के स्थान पर ह।
अहिअं < अधिकम्–ध के स्थान पर ह।
माहवीलदा < माधवीलता–ध के स्थान पर ह तथा त के स्थान पर द।
महुअर < मधुकरः–ध के स्थान पर ह तथा क का लोप, अ शेष।
सहा < सभा–भ के स्थान पर ह।
सहावो < स्वभावः–व का लोप और भ के स्थान पर ह।
णहं < नभः–भ के स्थान पर ह।
सोहइ < शोभते–भ के स्थान पर ह और विभक्ति चिह्न इ।
सोहणं < शोभनम्–भ के स्थान पर ह।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

आहरणं < आभरणम्–भ के स्थान पर ह।

दुल्लहो < दुर्लभः–रेफ का लोप और ल को द्वित्व तथा भ के स्थान पर ह।

विशेष–(क) स्वर से पर में नहीं रहने से–

संखो<शङ्खः–यहाँ ख स्वर से पर नहीं है, बल्कि अनुस्वार व्यञ्जन से परे है।

संघो < सङ्घः–,, घ ,, ,, ,, ,,

कंथा < कन्था–,, थ ,, ,, ,, ,,

खंभो < स्तम्भः– ,,भ ,, ,, ,, ,,

(ख) उपर्युक्त वर्णों के असंयुक्त होने पर ह आदेश होता है, संयुक्त होने से नहीं। जैसे–

अक्खइ < अक्षति–ख के स्थान पर ह नहीं हुआ।

अग्घइ < अर्घति–घ के स्थान पर ,,

कत्थइ < कथयति–थ के ,, ,,

बन्धइ < बन्धति–ध के ,, ,,

लब्भइ < लभते–भ के ,, ,,

(ग) गज्जइ घणो < गर्जयति घनः–घ प्रादि में रहने से ह नहीं हुआ।

गज्जन्ते खे मेहा < गर्जयन्ते खे मेघाः–ख आदि ,, ,,

पखलो < प्रखलः–प्रायः कथन के कारण ह नहीं हुआ।

पलंबघणो < प्रलम्बघनः– ,, ,,

अधीरो < अधीरः– ,, ,,

अधण्णो < अधन्यः– ,, ,,

जिणधम्मो < जिनधर्मः– ,, ,,

पणट्ठभओ < प्रनष्टभयः– ,, ,,

(१०६) स्वर से पर में रहने वाले असंयुक्त और अनादि ट, ठ और ड के स्थान में क्रमशः ड, ढ और ल आदेश होते हैं।[१] उदाहरण–

मढो < मठः–ठ के स्थान में ढ हुआ है।

सढो < शठः– ,, ,,

कमढो < कमठः– ,, ,,

कुढारो < कुठारः– ,, ,,

णडो < नटः–ट के स्थान में ड हुआ है।

भडो < भटः– ,, ,,

---

१. ठो ढः ८।१।१९९; टो डः ८।१।१९५; डो लः ८।१।२०२. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

विडवो < विटपः–ट के स्थान पर ड और प के स्थान पर व।

घडो < घटः–ट के स्थान पर ड।

घडइ < घटते–ट के स्थान पर ड और विभक्ति चिह्न इ।

वलया–मुँहं < वडवामुखम्–ड के स्थान पर ल, व लोप और आ स्वर के स्थान पर य श्रुति तथा ख के स्थान पर ह।

गरुलो < गरुडः–ड के स्थान पर ल।

कीलइ < क्रीडति–रेफ का लोप, ड के स्थान पर ल और विभक्ति चिह्न इ।

तलायो < तडागः–ड के स्थान पर ल, ग लोप और अ स्वर के स्थान में यश्रुति।

बलही < वडधिः–ड के स्थान में ल और ध के स्थान में ह तथा दीर्घ।

घंटा < घण्टा–स्वर से पर में ट के न होने से ट के स्थान में ड नहीं हुआ।

वेकुंठो < वैकुण्ठः–स्वर से पर में ठ के न होने से ढ नहीं हुआ।

मोंडं < मुण्डम्–स्वर से पर में ड के न होने से ल नहीं हुआ।

कोंडं < कुण्डम्– ,, ,, ,,

खट्टा < खट्टा–संयुक्त रहने के कारण ट का ड नहीं हुआ।

चिट्ठइ < तिष्ठति– संयुक्त रहने से ठ का ढ नहीं हुआ।

खड्गो < खड्गः–संयुक्त रहने से ड का ल नहीं हुआ।

टक्को < टङ्कः–अनादि–आदि भिन्न होने से ट को ड नहीं हुआ।

ठाई < स्थायी– ,, ,, ठ को ढ ,,

डिंभो < डिम्भः– ,, ,, ड को ल ,,

(१०७) प्यन्त पट धातु में ट का ल आदेश विकल्प से होता है।[१] यथा–

चबिला, चविडा < चपेटा–प के स्थान पर व और ट के स्थान में ल तथा विकल्पाभावपक्ष में ड।

फालेइ, फाडेइ < पाटयति–ट का ल तथा विकल्पाभाव में ड और विभक्ति चिह्न इ।

(१०८) सटा, शकट और कैटभ शब्द में ट को ढ होता है।[२] यथा–

सढा < सटा–ट के स्थान पर ढ।

सयढो < शकटः–क का लोप और अ स्वर के स्थान पर य श्रुति, तथा ट का क।

केढवो < कैटभः–ऐकार का एकार और ट का ढ तथा भ का व 'कैटभे वः' २।२९. सूत्र से।

---

१. चपेटा–पाटौ वा ८।१।१९८। हे.। २. सटा–शकट–कैटभे ढः ८।१।१९६. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(१०९) स्फटिक में टकार के स्थान पर ल होता है।[१] यथा–

फलिहो < स्फटिकः–ट का ल और क का ह।

(११०) प्रति उपसर्ग में तकार के स्थान में प्रायः डकार आदेश होता है।[२] जैसे–

पडिवण्णं <प्रतिपन्नम्–प्र के स्थान पर प, त के स्थान पर ड और प का व।

पडिहासो < प्रतिभासः–प्र के स्थान पर प, त के स्थान पर ड और भ के स्थान पर ह।

पडिहारो < प्रतिहारः–प्र को प और त को ड।

पाडिएप्फद्धी < प्रतिस्पर्धी–त के स्थान पर ड, स्प के स्थान पर प्फ, रेफ का लोप और ध को द्वित्व।

पडिसारो < प्रतिसारः–त के स्थान पर ड।

पडिसरो < प्रतिसरः–त के स्थान पर ड।

पडिसिद्धि < प्रतिसिद्धिः–,, ,,

पडिनिअत्तं < प्रतिनिवृत्तम्–त के स्थान पर ड, व का लोप और ऋ के स्थान पर अ।

पडिमा < प्रतिमा–त के स्थान पर ड।

पडिवया < प्रतिपत्–त के स्थान पर ड, प की व और अन्त्य व्यंजन त् के स्थान पर आ तथा य श्रुति।

पडंसुआ < प्रतिश्रुत्–त के स्थान पर ड, रेफ का लोप और अन्तिम व्यंजन त् के स्थान में आ।

पडिकरइ < प्रतिकरोति– त के स्थान में ड, क्रियापद करइ।

पहुडि < प्रभृति–भ के स्थान पर ह, ऋ के स्थान में उकार और त का ड।

पाहुडं < प्राभृतम्– ,, ,, ,,

वावडो < व्यापृतः–व्या के स्थान में वा, य के स्थान में व और ऋ के स्थान में अ तथा त को ड।

पडाया < पताका–त को ड, क् का लोप और आ स्वर के स्थान में य श्रुति।

वहेडओ < विभीतकः–भ के स्थान पर ह, ईकार को एकार, त को ड और क लोप तथा अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

हरडई < हरीतकी–त को ड, क का लोप और ई स्वर शेष।

---

१. स्फटिके लः ८।१।१९७. हे.।

२. प्रत्यादौ डः ८।१।२०६. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

दुक्कडं < दुष्कृतम्–आर्ष में ष् लोप, क को द्वित्व, ऋ को अ तथा त को ड।

सुकडं < सुकृतम्–आर्ष में ऋ के स्थान पर अ और त का ड।

आहडं < आहृतम्– ,, ,, ,, ,,

अवहडं < अवहृतम्– ,, ,, ,, ,,

पइसमयं < प्रतिसमयं–ति के स्थान पर ड नहीं हुआ और त का लोप हो जाने से इ स्वर शेष।

पईवं < प्रतीपम्–त के स्थान पर ड नहीं हुआ, त् का लोप होने से ई शेष।

संपइ < सम्प्रति–त लोप और इ स्वर शेष।

पइट्ठाणं < प्रतिष्ठानम्–त् लोप और इकार शेष तथा ष्ठा में से ष का लोप ठ की द्वित्व।

पइट्ठा < प्रतिष्टा– ,, ,, ,,

पइण्णा < प्रतिज्ञा–त लोप और ज्ञ के स्थान पर ण्ण।

(१११) ऋत्वादि गण के शब्दों में तकार का दकार होता है।[१] जैसे–

उदू < ऋतुः–ऋ के स्थान पर उ और त के स्थान में द तथा उ को दीर्घ।

रअदं < रजतम्–ज का लोप और उसके स्थान पर अ स्वर शेष तथा त को द।

आअदो < आगतः–ग का लोप और उसके स्थान पर अ स्वर शेष तथा त को द।

निव्वुदी < निर्वृतिः–रेफ का लोप, व को द्वित्व और ऋ के स्थान पर उ तथा त को द।

आउदी < आवृतिः–व का लोप, ऋ के स्थान पर उ और त को द।

संवुदी < संवृतिः–ऋ के स्थान पर उ तथा त को द।

सुइदी < सुकृतिः–क का लोप, ऋ के स्थान पर इ और त को द एवं दीर्घ।

आइदी < आकृतिः– ,, ,, ,,

हदो < हतः–त के स्थान पर द।

संजदो < संयतः–य के स्थान पर ज और त के स्थान पर द।

---

१. ऋत्वादिषु तो दः २।७ वर.; ऋत्वादि गण में निम्न शब्द परिगणित हैं–

ऋतुः किरातो रजतञ्च तातः सुसंगतं संयत साम्प्रतञ्च।
सुसंस्कृतिप्रीतिसमानशब्दास्तथाकृतिनिर्वृतितुल्यमेतत्॥
उपसर्गसमायुक्ते कृतिवृती वृतागतौ।
ऋत्वादिगणने नेया अन्ये शिष्टानुसारतः॥

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

विउदं < विवृतम्–व का लोप, ऋ के स्थान पर उ और त के स्थान में द।

संजादो < संयातः–य के स्थान पर ज और त को द।

संपदि < संप्रति–प्र के स्थान पर प और त को द।

पडिवड्ढी < प्रतिपत्तिः–प्रति उपसर्ग की ति के स्थान पर डि, प को व और त को द तथा इकार को दीर्घ।

विशेष–त के स्थान पर द होना शौरसेनी की विशेषता है। साधारण प्राकृत में शब्दरूप निम्न प्रकार बनेंगे।

उऊ < ऋतुः–ऋ के स्थान पर उ और त का लोप तथा उ को दीर्घ।

रअअं < रजतम्–ज और त का लोप तथा इनके स्थान पर अ, अ स्वर शेष।

एअं < एतम्–त का लोप और उसके स्थान पर अ स्वर शेष।

गओ < गतः–त का लोप और उसके स्थान पर अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व।

संपअं < साम्प्रतम्– म् का अनुस्वार, प्र के स्थान पर प और त का लोप, अ स्वर शेष।

जओ < यतः–य का ज और त का लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व।

तओ < ततः–त का लोप, अ स्वर शेष और ओत्व।

कअं < कृतम्–त का लोप, अ स्वर शेष और म् का अनुस्वार।

हआसो < हताशः–त का लोप, अ स्वर शेष तथा श का स।

ताओ < तातः–त का लोप अ स्वर शेष और विसर्ग का ओत्व।

(११२) दंश और दह, प्रदीपि और दीप धातुओं के दकार के स्थान में क्रमशः ड, ल और वैकल्पिक ध आदेश होते हैं।[१] जैसे–

डसइ < दशति–द के स्थान पर ड, तालव्य श के स्थान पर दन्त्य स तथा तकार का लोप और इकार स्वर शेष।

डहइ < दहति–द के स्थान पर ड, त और इ स्वर शेष।

पलीवेइ < प्रदीपयति–द के स्थान पर ल, प का व और य का संप्रसारण इ, गुण तथा त का लोप और इ स्वर शेष।

पलित्तं < प्रदीप्तम्–द का ल, ह्रस्व, प का लोप और त को द्वित्व।

धिप्पइ, दिप्पइ < दीप्यति–द के स्थान पर वैकल्पिक ध, य लोप और प को द्वित्व, त लोप और इ स्वर शेष।

---

१. दंश–दहोः ८।१।२१८. हे.। प्रदिपि–दोहदे लः ८।१।२२१. हे.। दीपौ धो वा ८।१।२२३. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(११३) स्वर से पर में रहने वाले असंयुक्त और अनादि न का ण आदेश होता है।[१] पर आदि में वर्तमान असंयुक्त न का विकल्प से ण आदेश होता है।[२] उदाहरण–

सअणं < शयनम्–य का लोप और अ स्वर शेष तथा स्वर से पर अनादि और असंयुक्त न का ण।

कणअं < कनकम्–स्वर से पर अनादि और असंयुक्त न का ण, क लोप और अ स्वर शेष।

वअणं < वचनम्–च लोप और अ स्वर शेष और न का ण।

माणुसो < मानुषः–न का ण और मूर्धन्य ष का दन्त्य स।

णरो, नरो < नरः–न के स्थान पर विकल्प से ण।

णई, नई < नदी–न के स्थान पर ण तथा द का लोप और ई स्वर शेष।

(११४) स्वर से पर में रहने वाले असंयुक्त और अनादि फ के स्थान में कहीं भ, कहाँ ह और कहीं दोनों–भ और ह होते हैं।[३] उदाहरण–

रेभ < रेफः–फ के स्थान पर भ।

सिभा < शिफा–तालव्य श के स्थान पर दन्त्य स और फ के स्थान पर भ।

मुत्ताहलं < मुक्ताफलम्–फ के स्थान पर ह।

सेभालिआ, सेहालिआ < शेफालिका–विकल्प से फ के स्थान पर भ और ह तथा क लोप और आ स्वर शेष।

सभरी, सहरी < सफरी–फ के स्थान में भ और ह।

सभलं, सहलं < सफलम्–फ के स्थान में भ और ह।

विशेष–

गुंफइ < गुम्फति–स्वर से पर में नहीं रहने के कारण फ का भ नहीं हुआ।

पुप्फं < पुष्पम्–संयुक्त रहने के कारण उक्त नियम लागू नहीं हुआ।

फणी < फनिः–आदि में होने से फ को भ या ह नहीं हुआ।

(११५) स्वर से पर में रहने वाले असंयुक्त और अनादि ब का विकल्प से व आदेश होता है।[४] जैसे–

अलावू, अलाऊ < अलावू–ब के स्थान पर विकल्प से व और विकल्पाभावपक्ष में व का लोप तथा ऊ शेष।

सवलो < सबलः–ब के स्थान पर व।

---

१. नो णः ८।१।२२८. हे.।
२. वादौ ८।१।२२८ हे.।
३. फो भ-हौ ८।१।२३६. हे.।
४. बो वः ८।१।२३७. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(११६) विसिनी शब्द के व के स्थान पर भ आदेश होता है।[१] यथा–

भिसिणी < विसिनी–व के स्थान पर भ और न के स्थान पर ण।

(११७) कबन्ध शब्द में व के स्थान पर म और य होते हैं।[२] यथा–

कमन्धो, कयन्धो < कबन्धः–ब के स्थान पर म होने से कमन्ध और य होने से कयन्ध रूप बना है।

(११८) विषम शब्द में म के स्थान पर विकल्प से द होता है।[३] यथा–

विसढो, विसमो < विषमः–म के स्थान पर विकल्प से ढ हुआ है।

(११९) मन्मथ शब्द में म के स्थान पर विकल्प से व होता है।[४] यथा–

वम्महो < मन्मथः–म के स्थान पर व, संयुक्त न का लोप और म को द्वित्व तथा थ के स्थान पर ह।

(१२०) अभिमन्यु शब्द में म के स्थान पर व और म विकल्प से होते हैं।[५] यथा–

अहिवन्नू, अहिमन्नू < अभिमन्युः–भ के स्थान पर ह, म के स्थान पर विकल्प से व, विकल्पाभाव पक्ष में म तथा संयुक्त य का लोप और न को द्वित्व, दीर्घ।

(१२१) भ्रमर शब्द में म के स्थान पर विकल्प से स आदेश होता है।[६] यथा–

भसलो, भमरो < भ्रमरः–संयुक्त रेफ का लोप, म के स्थान पर विकल्प से स और रेफ के स्थान पर लत्व।

(१२२) पद के आदि में य का ज आदेश होता है।[७] यथा–

जसो < यशः–य के स्थान पर ज और तालव्य श को दन्त्य स।

जमो < यमः–य के स्यान पर ज हुआ है।

जाइ <याति–य के स्थान पर ज और त का लोप, इ स्वर शेष।

विशेष–

अवयवो < अवयवः–पद के आदि में न रहने के कारण उक्त नियम चरितार्थ नहीं हुआ।

संजमी < संयमः–उपसर्ग युक्त होने से अनादि य का ज हुआ है।

संजोओ < संयोगः– ,, ,, ,,

अवजसो < अपयशः–प का व हुआ है और य का ज तथा तालव्य श का दन्त्य स।

---

१. विसिन्यां भः ८।१।२३८. हे.।
२. कबन्धे म–यौ ८।१।२३९. हे.।
३. विषमे मो ढो वा ८।१।२४१. हे.।
४. मन्मथे वः ८।१।२४२.। हे.।
५. वाभिमन्यौ ८।१।२४३. हे.।
६. भ्रमरे सो वा ८।१।२४४. हे.।
७. आदेर्यो जः ८।१।२४५. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

गाढ–जोव्वणा < गाढयौवना–कल्पलतिका के नियमानुसार सामान्यतः उत्तरपदस्थ य का भी ज होता है।

अजोग्गो < अयोग्यः– ,, ,, ,,

अहाजाअं < यथाजातम्–आदि य का लोप हुआ है और अ स्वर शेष है, थ के स्थान पर ह तथा त का लोप और अ स्वर शेष।

(१२३) तीय एवं कृत् प्रत्ययों के यकार के स्थान में द्विरुक्त ज (ज्ज) विकल्प से आदेश होता है।[१] यथा–

दीज्जो, दीओ < द्वितीयः–तीय प्रत्यय के यकार के स्थान पर ज्ज।

उत्तरिज्जं, उत्तरीअं < उत्तरीयः–य के स्थान पर ज्ज।

करणिज्जं, करणीअं < करणीयम्–अनीय प्रत्यय के य के स्थान पर विकल्पाभाव पक्ष में य का लोप और अ स्वर शेष।

रमणीज्जं, रमणीअं < रमणीयम्– ,, ,, ,,

विम्हयणिज्जं, विम्हयणीअं < विस्मयनीयम्– ,, ,,

जवणिज्जं, जवणीअं < यवनीयम्– ,, ,, ,,

बिइज्जो, बीओ < द्वितीयः–तीय प्रत्यय के य के स्थान पर ज्ज।

पेज्ज, पेआ < पेया–यत् प्रत्यय के य के स्थान पर विकल्प से ज्ज, विकल्पाभावपक्ष में य का लोप और आ स्वर शेष।

(१२४) युष्मद् शब्द के य के स्थान में त आदेश होता है।[२] जैसे–

तुम्हारिसो < युष्मादृशः–य के स्थान में त तथा ष्म के स्थान में म्ह तथा दृशः के स्थान पर रिसो हुआ है।

(१२५) यष्टि शब्द में य के स्थान पर ल आदेश होता है।[३] यथा–

लट्ठी < यष्टिः–य के स्थान पर ल और ष का लोप और ट को द्वित्व तथा ट को ठ।

वेणु–लट्ठी < वेणु–यष्टि– ,, ,, ,,

उच्छु–लट्ठी < इक्षु–यष्टिः–इक्षु के स्थान पर उच्छु तथा शेष पूर्ववत्।

महु–लट्ठी < मधु–यष्टिः–ध के स्थान पर ह, य को ल और ष का लोप, ट को द्वित्व, उत्तरवर्ती के ट स्थान पर ठ तथा दीर्घ।

---

१. वोत्तरीयानीय–तीय–कृद्ये ज्जः ८।१।२४८. हे.।

२. युष्मद्यर्थपरे तः ८।१।२४६. हे.।

३. यष्ट्यां लः।१।२४७.। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(१२६) छविहीन अर्थ में छाया शब्द में यकार के स्थान पर विकल्प से हकार आदेश होता है।[१] यथा–

छाहा < छाया–या के स्थान पर हा।

वच्छस्सच्छाहा < वृक्षस्य छाया–य के स्थान पर ह।

मुहच्छाया < मुखच्छाया–कान्ति अर्थ होने से छाया शब्द के य को ह नहीं हुआ।

(१२७) हरिद्रादि गण के शब्दों में असंयुक्त र के स्थान में ल आदेश होता है।[२] उदाहरण–

हलिद्दी < हरिद्रा–र के स्थान पर ल और संयुक्त रेफ का लोप तथा द को द्वित्व और आकार को ईकार।

दलिद्दाइ < दरिद्राति–र के स्थान पर ल, संयुक्त रेफ का लोप और द को द्वित्व तथा त का लोप और इ स्वर शेष।

दलिद्दो < दरिद्रः–र के स्थान पर ल, संयुक्त रेफ और य का लोप तथा द को द्वित्व।

दालिद्दं < दारिद्र्यम्–र के स्थान पर ल, संयुक्त रेफ और य का लोप तथा द को द्वित्व।

हलिद्दो < हरिद्रः–र को ल और संयुक्त रेफ का लोप तथा द को द्वित्व।

जहुट्ठिलो < युधिष्ठिर–य के स्थान पर ज, ध के स्थान पर ह, ष का लोप और ठ की द्वित्व और र को ल।

सिढिलो < शिथिरः–तालव्य श को दन्त्य स, थ के स्थान पर ढ और रेफ को ल।

मुहलो < मुखरः–ख के स्थान पर ह और र को ल।

चलणो < चरणः–र के स्थान पर ल।

वलुणो < वरुणः– ,, ,,

कलुणो < करुणः– ,, ,,

इंगालो < अंगारः–अ के स्थान पर इ और र को ल।

सक्कालो < सत्कारः–संयुक्त त का लोप और क को द्वित्व तथा रेफ को ल।

सोमालो < सुकुमारः–क का लोप, उ की सन्धि और र को ल।

चिलाओ < किरातः–किरात शब्द में 'किरते चः' ८।१।१८३ से क को च हुआ है, र के स्थान पर ल।

---

१. छायायां होकान्तौ वा ८।१।२४९.। हे .। २. हरिद्रादौ लः ८।१।२५४.। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

फलिहा < परिखा–र के स्थान पर ल, ख के स्थान पर ह।

फलिहो < परिघः–र के स्थान पर ल और घ के स्थान पर ह।

फालिहद्दो < पारिभद्रः–र के स्थान पर ल, भ को ह और संयुक्त र का लोप तथा द को द्वित्व।

काहलो < कातरः–त को ह और र को ल हुआ है।

लुक्को < रुग्णः– र के स्थान पर ल, ग्ण को क्क हुआ है।

अवद्दालं < अपद्वारम्–अप के स्थान पर अव, व् का लोप, द को द्वित्व और र को ल।

भसलो < भ्रमरः–संयुक्त रेफ का लोप, म के स्थान पर स और र को ल।

जढलं < जरठम्–र के स्थान पर ल और ठ को ढ होता है तथा यहाँ वर्णविपर्यय होने से जढलं हुआ है।

बढलो < वठरः–ठ को ढ तथा र को ल हुआ है।

निट्ठुलो < निष्ठुरः–ष् का लोप, ठ को द्वित्व तथा र को ल हुआ है।

(१२८) स्थूल शब्द के लकार को र होता है।[१] यथा–

थोरं < स्थूलम्–संयुक्त स का लोप और ल के स्थान पर र।

(१२९) लाहल, लाङ्गल और लाङ्गूल शब्दों में विकल्प से ल को ण आदेश होता है।[२] यथा–

णाहलो < लाहलः–ल के स्थान पर ण होता है।

णङ्गलं < लंगलम्– ,, ,,

णाङ्गूलं < लंगूलम्– ,, ,,

(१३०) ललाट शब्द में आदि ल को ण होता है।[३] यथा–

णिडालं, णडालं < ललाटम्–ल के स्थान पर ण, ट का ड और वर्णविपर्यय।

(१३१) स्वप्न और नीवी शब्द में व को विकल्प से म होता है।[४] यथा–

सिमिणो, सिविणो < स्वप्नः।

नीमी, नीवी < नीवी।

(१३२) संस्कृत वर्णमाला के श और ष के स्थान में प्राकृत में स आदेश होता है।[५] यथा–

---

१. स्थूले लो रः ८।१। २५५. हे.।

२. लाहल–लाङ्गल–लाङ्गूले वादेर्ण ८।१।२५६. हे.।

३. ललाटे च ८।१। २५७. हे.।

४. स्वप्ननीव्योर्वा ८।१।२५९. हें.। ५. श–षोः सः ८।१।२६०. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

कुसो < कुशः–तालव्य श के स्थान पर दन्त्य स।

सेसो < शेषः–तालव्य और मूर्धन्य दोनों के स्थान पर दन्त्य स।

सद्दो < शब्दः–तालव्य श को दन्त्य स, संयुक्त ब् का लोप और द को द्वित्व।

निसंसो < नृशंसः–नकारोत्तर ऋ को इ और तालव्य श को दन्त्य स।

वंसो < वंशः–तालव्य श को दन्त्य स।

दस < दश– ,, ,,

सोहइ < शोभते–तालव्य श को दन्त्य स, भ के स्थान पर ह और विभक्ति चिह्न इ।

सण्डो < षण्डः–मूर्धन्य ष को दन्त्य स।

कसाओ < कषायः– ,, ,,

विसेसो < विशेषः–दोनों ही श, ष को दन्त्य स।

(१३३) दसन् और पाषाण शब्दों में श और ष के स्थान पर विकल्प से ह होता है।[१] यथा–

दसमुहो, दहमुहो < दशमुखः।

दहबलो, दसबलो < दशबलः।

दहरहो, दसरहो < दशरथः।

पाहाणो < पाषाणः।

(१३४) अनुस्वार से पर में रहने वाले ह के स्थान में विकल्प से घ आदेश होता है।[२] यथा–

सिंघो, सीहो < सिंहः।

संघारो, संहारो < संहारः।

(१३६) व्याकरण, प्राकार और आगत शब्दों में क, ग और स्वर का विकल्प से लोप होता है।[३]

वारणं, वायरणं < व्याकरणम्–प्रथम् रूप क का सर्वापहारी लोप होने से बनता है और द्वितीय में अ स्वर शेष तथा इसके स्थान पर य।

पारो, पयारो < प्राकारः– ,, ,, ,,

आओ, आगओ < आगतः–प्रथम रूप ग का सर्वापहारी लोप होने से और द्वितीय लोप न होने से बनता है।

---

१. दश–पाषाणो हः ८।१।२६२. हे.।

२. हो घोनुस्वारात् ८।१।२६४. हे.।

३. व्याकरण–प्राकारगते कगोः ८।१।२६८, हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(१३६) किसलय, कालायस और हृदय शब्दों में स्वर सहित यकार का लोप होता है।[१] यथा–

किसलं, किसलयं < किसलयम्।

कालासं, कालायसं < कालायसम्।

महण्णवसमा सहिआ < महार्णवसमा सहृदया।

जाला ते सहिअएहिं घेप्पन्ति < जाला ते सहृदयभिः ग्रह्लन्ति।

संयुक्त व्यञ्जन विकृति–

(१३७) क, ग, ट, ड, त, द, प, श, ष और स व्यञ्जन वर्ण जब किसी संयोग के प्रथम अक्षर हों तो उनका लुक् हो जाता है और अनादि में वर्तमान शेष वर्ण को द्वित्व होता है।[२] उदाहरण–

भुत्तं < भुक्तम्–क लोप और द्वित्व।

सित्थं < सिक्थम्–क लोप और थ को द्वित्व।

मुत्तं < मुक्तम्–क लोप और त को द्वित्व।

सिणिद्धो < स्निग्धम्–ग लोप और ध को द्वित्व तथा पूर्ववर्ती ध को द।

सप्पओ < षट्पदः–ट लोप और प को द्वित्व।

सज्जो < षड्जो–ड लुक् और ज को द्वित्व।

निट्ठुरो ८ निष्ठुरः–ष लुक् और ठ को द्वित्व।

(१३८) म, न और य ये व्यञ्जन यदि संयुक्त के अन्तिम अक्षर हों तो उनका लुक् होता है और अनादि में वर्तमान शेष वर्णों को द्वित्व हो जाता है।[३] जैसे–

जुग्गं < युग्मम्–म लक् और ग को द्वित्व।

रस्सी < रश्मिः–म लोप और स को द्वित्व।

सरो < स्मरः–म लोप और द्वित्वाभाव।

नग्गो < नग्नः–न लुक् और ग को द्वित्व।

भग्गो < भग्नः– ,, ,,

लग्गो < लग्नः– ,, ,,

सोम्मो < सौम्यः–य लुक् और म् को द्वित्व।

(१३९) ल, व, र ये व्यञ्जन संयुक्त के आद्यक्षर हों अथवा–अन्त्याक्षर चन्द्रशब्द को छोड़कर सर्वत्र–संयुक्त के आदि और अन्त में उक्त व्यञ्जनों का लुक् होता है और अनादि में स्थित शेष वर्णों को द्वित्व होता है।[४] उदाहरण–

---

१. किसलय-कालायस-हृदये यः ८।१।२६९. हे.।

२. उपरिलोपः कगटडतदपशषसाम् ३।१. वर.।

३. अधो मनयाम् ३।२. वर.। ४. सर्वत्र लवराम् ३।३. वर.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

उक्का < उल्का–संयुक्तादि ल लुक् और क को द्वित्व।

वक्कलं < वल्कलम् ,, ,,

सण्हं < श्लक्ष्णम्–संयुक्तान्त्य ल लुक् और द्वित्वाभाव।

विक्कवो < विक्लवः–संयुक्तान्त्य ल लुक् और क की द्वित्व।

सद्दो < शब्दः–संयुक्तादि व लुक् और द को द्वित्व।

अद्दो < अब्दः– ,, ,,

पिक्कं < पक्वम्–संयुक्तान्त्य व लुक् और क को द्वित्व, पकारोत्तर अ को इकार।

धत्थं < ध्वस्तम्–संयुक्तान्त्य व लुक्, ध को द्वित्वाभाव, स्त में संयुक्तादि स् लोप और त को द्वित्व, उत्तरवर्ती त को थ।

अक्को < अर्कः–रेफ का लोप और क को द्वित्व।

वग्गो < वर्गः–संयुक्तादि र लुक् और ग को द्वित्व।

चक्कं < चक्रम्–संयुक्तादि र लुक् और ग को द्वित्व।

गहो < ग्रहः–संयुक्तान्त्य र लुक् और द्वित्वाभाव।

रत्ती < रात्रिः–संयुक्तान्त्य र् लुक् और त को द्वित्व।

चंदो, चंद्रो < चन्द्रः–संयुक्तान्त्य रेफ का लोप और द्वित्वाभाव; मतान्तर से चन्द्रो भी बनता है।

(१४०) द्र के रेफ का विकल्प से लुक् होता है।[१] यथा–

दोहो, द्रोहो < द्रोहः–संयुक्तान्त्य रेफ का विकल्प से लोप।

रुद्दो, रुद्रो < रुद्रः–संयुक्तान्त्य रेफ का विकल्प से लोप, लोप होने पर द को द्वित्व।

भद्दं, भद्रं < भद्रम्–संयुक्तान्त्य रेफ का लोप और द को द्वित्व, विकल्पाभाव में लोपाभाव।

समुद्दो, समुद्रो < समुद्रः–संयुक्तान्त्य रेफ का लोप और द को द्वित्व।

हदो, ह्रदो < ह्रदः–संयुक्तान्त्य रेफ का विकल्प से लोप।

(१४१) ज्ञा धातु सम्बन्धी ञ् का लोप विकल्प से होता है एवं अनादि ज को द्वित्व होता है।[२] यथा–

सव्वज्जो, सव्वण्णू < सर्वज्ञः–संयुक्तादि रेफ का लोप, व द्वित्व, ञ् लोप और ज को द्वित्व; ञ् लोपाभाव पक्ष में ण को द्वित्व, अ को ऊ।

---

१. द्रेरो वा ३।४. वर.। २. सर्वज्ञतुल्येषु ञः ३।५. वर.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

अप्पज्जो, अप्पण्णू < अल्पज्ञः–संयुक्तादि ल लुक्, प द्वित्व; ज्ञ के ञ् का लोप और ज द्वित्व; ञ् लोपाभावपक्ष में ण द्वित्व और अकार को ऊकार।

अहिज्जो, अहिण्णू < अभिज्ञः–भ को ह, ञ् लोप, ज को द्वित्व; विकल्पाभाव पक्ष में ण को द्वित्व, अकार को ऊकार।

जाणं, णाणं < ज्ञानम्–ञ लोप और ज शेष, नकार को णत्व, विकल्पाभाव में ज्ञ के स्थान पर ण।

दइवज्जो, दइवण्णू < दैवज्ञः–ऐ के स्थान पर अइ, ञ लोप और ज को द्वित्व।

इंगिअजो, इंगिअण्णू < इंगितज्ञः–त लोप और अ स्वर शेष; ञ लोप, ज द्वित्व।

मणोज्जं, मणोण्णं < मनोज्ञम्–ञ् लोप और ज को द्वित्व।

पज्जा, पण्णा < प्रज्ञा–ञ लोप, ज की द्वित्व, विकल्पाभाव पक्ष में ज लोप और ण को द्वित्व।

अज्जा, अण्णा < आज्ञा– ,, ,, ,, ,,

संजा, सण्णा < संज्ञा–ञ लोप और ज शेष, स्वर से पर न होने से द्वित्वाभाव; विकल्पाभाव पक्ष में ज लोप और अवशेष ण को द्वित्व।

(१४२) वर्ग के द्वितीय और चतुर्थ वर्णों के द्वित्व होने पर द्वितीय वर्ण के पूर्व उसी वर्ण के प्रथम और तृतीय अक्षर हो जाते हैं।[१] यथा–

वक्खाणं < व्याख्यानम्–य लोप, शेष ख को द्वित्व तथा पूर्ववर्ती ख को क।

अग्घो < अर्घः–संयुक्त रेफ का लोप, घ को द्वित्व और पूर्ववर्ती घ को ग।

(१४३) दीर्घ स्वर एवं अनुस्वार से पर में रहने वाले संयुक्त शेष व्यञ्जन का द्वित्व नहीं होता। जैसे–

ईसरो < ईश्वरः–संयुक्तान्त्य व का लोप और पूर्ववर्ती दीर्घ स्वर होने से स को द्वित्व का अभाव।

लासं < लास्यम्–संयुक्तान्त्य य का लोप, पूर्व में दीर्घ स्वर होने से द्वित्वाभाव।

संकंतो < संक्रान्तः–संयुक्तान्त्य र का लोप, पूर्व में अनुस्वार रहने से द्वित्वाभाव।

संझा < सन्ध्या–संयुक्तान्त्य य का लोप, ,, ,,

---

१. द्वितीय–तुर्ययोपरि पूर्वः ८।२।९०. हे.।

२. न दीर्घानुस्वारात् ८।२।९२. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(१४४) रेफ और हकार को द्वित्व नहीं होता है।[१] यथा–

सुंदेरं < सौन्दर्यम्–संयुक्तादि य का लोप होने पर रेफ को द्वित्व नहीं हुआ।

बम्हचेरं < ब्रह्मचर्यम्– ,, ,, ,,

धीरं < धैर्यम्– ,, ,, ,,

विहलो < विह्वलः–संयुक्तान्त्य व का लोप और ह को द्वित्वाभाव।

कहावणो < कार्षापणः–संयुक्तादि रेफ का लोप, ष के स्थान पर ह और ह को द्वित्वाभाव तथा प को व।

(१४६) समासान्त पदों में पूर्वोक्त नियम की प्रवृत्ति विकल्प से होती है।[२] यथा–

नइ–ग्गामो, नइ–गामो < नदी–ग्रामः–द लोप, ई स्वर शेष, संयुक्तान्त्य रेफ का लोप और विकल्प से ग को द्वित्व।

कुसुमप्पयरो, कुसुम–पयरो < कुसुमप्रकरः–रेफ का लुक् होने पर प को विकल्प से द्वित्व।

देव–त्थुई, देव–थुई < देव–स्तुतिः–स लोप, त को विकल्प से द्वित्व, द्वितीय त के स्थान पर थ।

तेल्लोक्कं, तेलोक्कं < त्रैलोक्यम्–र लोप, ल को विकल्प से द्वित्व।

आणालक्खम्भो, आणाल–खम्भो < अलानस्तम्भः–समास होने से विकल्प से द्वित्व एवं वर्णव्यत्यय।

मलय–सिहरक्खण्डं, मलय–सिहर–खण्डं < मलयशिखरखण्डम्–समास में विकल्प से ख को द्वित्व।

पम्मुक्कं, पमुक्कं < प्रमुक्तम्–समास होने से म को विकल्प से द्वित्व हुआ है।

(१४६) तैलादिगण के शब्दों में प्राचीन प्राकृत आचार्यों के निर्णयानुसार कहीं अनन्त्य और अन्त्य व्यञ्जनों को द्वित्व होता है।[३] उदाहरण–

तेल्लं[४] < तैलम्–अन्त्य व्यञ्जन ल को द्वित्व।

---

१. र–होः ८।२।९३. हे.।

२. समासे वा ८।२।९७. हे.।

३. तैलादौ ८।२।९८. हे.।

४. प्राकृत प्रकाश में तैलादिगण के बदले नीडादि गण का उल्लेख मिलता है। 'नीडादिषु' ३।५२ में इस गण के शब्दों का नियमन किया है। 'कल्पलतिका' में नीडादिगण के शब्द निम्न बतलाये गये हैं–

नीडव्याहृतमण्डूकस्रोतांसि प्रेमयौवने।
ऋजुः स्थूलं तथा तैलं त्रैलोक्यं च गणो यथा॥

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

मंडुक्को < मंडूकः–अन्त्य व्यञ्जन क को द्वित्व।

उज्जू < ऋजु–अन्त्य व्यञ्जन ज को द्वित्व।

सोत्तं < स्रोतम्–अन्त्य व्यञ्जन त को द्वित्व।

पेम्मं < प्रेमम्–अन्त्य व्यञ्जन म को द्वित्व।

विड्डा < व्रीडा–अन्त्य व्यञ्जन ड को द्वित्व।

जोव्वणं < यौवनम्–अनन्त्य–मध्य व्यञ्जन व को द्वित्व।

बहुत्तं < बहुत्वम्–अन्त्य व्यञ्जन त को द्वित्व।

(१४६) सेवादिगण के शब्दों में प्राचीन प्राकृत आचार्यों के मतानुसार कहीं अन्त्य और कहीं अनन्त्य व्यञ्जनों को विकल्प से द्वित्व होता है।[१]

उदाहरण–

सेव्वा < सेवा–अन्त्य व्यञ्जन व को द्वित्व।

विहित्तो, विहिओ < विहितः–अन्त्य व्यञ्जन त को विकल्प से द्वित्व। विकल्पाभाव में त लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

कोउहल्लं, कोउहलं < कौतूहलम्–अन्त्य व्यञ्जन ल को द्वित्व।

वाउल्लो, वाउलो < व्याकुलः–संयुक्तान्त्य य का लोप, क का लोप, उ स्वर शेष और विकल्प से ल को द्वित्व।

नेड्डुं, नीडं, नेडं < नीडम्–अन्त्य व्यञ्जन ड को विकल्प से द्वित्व।

नक्खा, नहा < नखाः–अन्त्य व्यञ्जन ख को विकल्प से द्वित्व।

माउक्कं, माउअं < मृदुकम्–ऋ को आ, द को लोप, शेष ऋ के स्थान पर उत्व और विकल्प से क को द्वित्व।

एक्को, एओ < एकः–अन्त्य व्यञ्जन क को द्वित्व, विकल्पाभावपक्ष में क का लोप अ स्वर शेष, विसर्ग की ओत्व।

थुल्लो, थोरो < स्थूलः–संयुक्तादि स् का लोप, ल को द्वित्व।

हुत्तं, हूअं < हुतम्–त को द्वित्व, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप, अ स्वर शेष।

---

१. सेवादौ वा ८।२।९९. हे.। सेवादि गण में निम्न शब्द परिगणित हैं–

सेवा कौतूहलं दैवं विहितं मखजानुनी।
पिवादयः नखा शब्दा एतादाद्या यथार्थकाः॥
त्रैलोक्यं कर्णिकारश्च वेश्या मूर्जञ्च दुःखितम्।
रात्रिविश्वासनिश्वासा मनोऽस्तेश्वररश्मयः॥
दीर्घैक शिवतूष्णीक मित्रपुष्पादिदुर्लभाः।
दुष्करोनिष्कृपःकर्मकरेष्वासपरस्परम्।
नायकाद्यास्तथा शब्दाः सेवादिगणसम्मताः॥ कल्पलतिका॥

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

दइव्वं, दइवं < दैवम्–अन्त्य व्यञ्जन व को विकल्प से द्वित्व।

तुण्हिक्को, तुण्हिओ < तूष्णीकः–ष्ण के स्थान पर ण्ह और अन्त्य व्यञ्जन क को विकल्प से द्वित्व।

मुक्को, मूओ < मूकः–अन्त्य व्यञ्जन क को विकल्प से द्वित्व, विकल्पाभाव में क का लोप और अ स्वर शेष।

खण्णू, खाणू < स्थाणुः–स्था के स्थान पर ख तथा अन्त्य व्यंजन को द्वित्व।

थिण्णं, थीणं < स्त्यानम्–स्त्या के स्थान पर थी, अन्त्य व्यंजन ण को द्वित्व।

अम्हक्केरं, अम्हकेरं < अस्मदीयम्–अन्त्य व्यंजन क को विकल्प से द्वित्व।

तं च्चेअ, तं चेअ < तं चेव–अनन्त्य–आदि व्यंजन च को द्वित्व, व का लोप और अ स्वर शेष।

सो च्चिअ, सो चिअ < सो चेव ,, ,, ,, ,,

(१४७) क्ष के स्थान पर ख आदेश होता है, किन्तु कुछ स्थानों में छ और झ भी आदेश होते हैं।[१] यथा–

खओ < क्षयः–क्ष के स्थान पर ख, य लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व।

लक्खणं<लक्षणम्–क्ष के स्थान पर ख, ख को द्वित्व और पूर्व के ख को क।

छीणं, खीणं, झीणं < क्षीणम्–क्ष के स्थान पर ख होने से खीणं, छ होने से छीणं और झ होने झीणं रूप बनता है।

झिज्जइ < क्षिद्यति–क्ष के स्थान पर झ, द लोप और य का ज तथा द्वित्व।

(१४८) अक्ष्यादि गण के शब्दों में क्ष के स्थान पर ख न होकर छ आदेश होता है। आदि में क्ष का छ और मध्य या अन्त्य क्ष के स्थान में च्छ होता है।[२] यथा–

अच्छी < अक्षि–क्ष के स्थान पर च्छ आदेश हुआ है।

उच्छू < इक्षुः–इ के स्थान पर उ और क्ष के स्थान पर च्छ हुआ है तथा दीर्घ।

लच्छी < लक्ष्मीः–क्ष के स्थान पर च्छ हुआ है।

कच्छो < कक्षः– ,, ,,

छीअं < क्षीतम्–क्ष के स्थान पर छ और त का लोप तथा अ स्वर शेष।

छीरं < क्षीरम्– ,, ,, ,,

वच्छो < वृक्षः–ऋ के स्थान पर अ और क्ष के स्थान पर च्छ हुआ है।

---

१. क्षः खः क्वचित्तु छ–झौ ८।२।३. हे.। २. छो क्ष्यादौ ८।१७. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

मच्छिआ < मक्षिका–क्ष के स्थान पर च्छ और क लोप तथा आ स्वर शेष।

सरिच्छो< सदृक्षः–द लोप और ऋ के स्थान पर रि तथा क्ष की च्छ हुआ है।

छेत्तं < क्षेत्रम्–क्ष को छ तथा त्र में से र लोप और त को द्वित्व।

छुहा < क्षुधा–क्ष को छ और ध को ह हुआ है।

दच्छो < दक्षः–क्ष को च्छ हुआ है।

कुच्छी < कुक्षिः–,, ,,

वच्छं < वक्षम्– ,, ,,

छुण्णो < क्षुण्णः–क्ष के स्थान पर छ हुआ है।

कच्छा < कक्षा–क्ष के स्थान पर च्छ हुआ है।

छारो < क्षारः–क्ष के स्थान पर छ हुआ है।

कुच्छेअयं < कौक्षेयकं–क्ष के स्थान पर च्छ और य लोप तथा अ स्वर शेष।

छुरो < क्षुरः–क्ष को छ हुआ है।

उच्छा < उक्षन्–क्ष को च्छ हुआ है।

छयं < क्षतम्–क्ष को छ हुआ है।

सारिच्छं < सादृक्ष्यम्–क्ष के स्थान पर च्छ।

(१४९) उत्सव अर्थ के बाचक छ शब्द में क्ष के स्थान पर छ आदेश होता है।[१] यथा–

छणो < क्षणः–उत्सव अर्थ होने से क्ष के स्थान पर छ हुआ है।

खणो < क्षणः –समय वाचक होने से क्ष के स्थान पर ख हुआ है।

(१५०) पृथ्वी अर्थ होने पर क्षमा शब्द में क्ष के स्थान पर छ आदेश होता है।[२] यथा–

छमा < क्षमा–पृथ्वी अर्थ होने से क्ष के स्थान पर छ।

खमा < क्षमा–माफी माँगना अर्थ होने से क्ष के स्थान में ख।

(१५१) ऋक्ष शब्द में क्ष के स्थान पर छ विकल्प से होता है।[३] यथा–

रिच्छं, रिक्खं < ऋक्षम्–ऋ के स्थान पर रि, क्ष के स्थान पर च्छ तथा विकल्पाभाव पक्ष में क्ख हुआ है।

(१९२) संयुक्त क्म और ड्म के स्थान में प आदेश होता है।[४] यथा–

रुप्पं, रुप्पिणी–रुक्मम्, रुक्मिणी–क्म के स्थान पर प्प आदेश हुआ है।

कुप्पलं < कुड्मलम्–ड्म के स्थान पर प्प आदेश हुआ है।

---

१. क्षण उत्सवे ८।२।२०. हे.।
२. क्षमायां कौ ८।२।१८. हे.।
३. ऋक्षे वा ८।२।१९. हे.।
४. ड्मक्मोः ८।२।५२. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(१६३) ष्क और स्क के स्थान में ख आदेश होता है, यदि उन संयुक्ताक्षरों से घटित शब्द द्वारा किसी संज्ञा की प्रतीति होती हो।[१] यथा–

पोक्खरं < पुष्करम्–ष्क के स्थान पर क्ख हुआ है।

पोक्खरिणी < पुष्करिणी ,, ,,

खंधो < स्कन्धः–स्क के स्थान पर ख।

खंधावारो < स्कन्धावारः–स्क के स्थान पर ख।

अवक्खंदो < अपस्कन्दः–स्क के स्थान पर क्ख हुआ है।

दुक्करं < दुष्करम्–संज्ञा न होने से ष्क के स्थान पर ख आदेश नहीं हुआ, किन्तु संयुक्त ष का लोप और क को द्वित्व।

निक्कामं < निष्कामम्– ,, ,, ,,

सक्कयं < संस्कृतम्–संज्ञा न होने से स्कृ के स्थान पर क्ख नहीं हुआ, किन्तु स् लोप और क को द्वित्व।

निक्कंपं < निष्कम्पम्–ष्क के स्थान पर ख नहीं हुआ किन्तु ष् लोप, क को द्वित्व।

निक्कओ < निष्कृतः–ष्कृ के स्थान पर क्ख नहीं हुआ, किन्तु ष् का लोप, क को द्वित्व, ऋ का अ।

नमोक्कारो < नमस्कारः–स्क को क, अ को ओ, स लोप और क को द्वित्व।

सक्कारो < सत्कारः–त् लोप और क को द्वित्व।

तक्करो < तस्करः–स्क के स्थान पर ख नहीं, स लोप और क को द्वित्व।

(१५४) ऊष्ट्र, इष्ट और संदष्ट शब्द के ष्ट को छोड़कर अन्य ष्ट के स्थान में ठ आदेश होता है।[२] यथा–

लट्ठी < यष्टि–य के स्थान पर ल और ष्ट के स्थान पर ठ तथा द्वित्व, पूर्व ठ के स्थान पर ट एवं ईकार को दीर्घ।

मुट्ठी < मुष्टिः–ष्ट के स्थान पर ट्ठ और इकार को दीर्घ।

दिट्ठी < दृष्टिः–दृ में रहने वाली ऋ के स्थान पर इकार; ष्ट के स्थान में ट्ठ और इकार का दीर्घ।

सिट्ठी < श्रेष्ठिः–संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श के स्थान पर दन्त्य स, एकार को इकार तथा ष्ठ को ट्ठ और इकार को दीर्घ।

---

१. ष्क–स्कयोर्नाम्नि ८।२।४. हे.। २. ष्टस्यानुष्ट्रेष्टासंदष्टे ८।२।३४–हे.

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

पुट्ठो < पृष्ठः–पृ में रहनेवाली ऋ के स्थान पर उकार और ष्ठ के स्थान पर ट्ठ, विसर्ग की ओत्व।

कट्ठं < कष्टम्–ष्ट के स्थान पर ट्ठ।

सुरट्ठो < सुराष्ट्रः–रा को ह्रस्व, ष्ट के स्थान पर ट्ठ, रेफ का लोप और विसर्ग की ओत्व।

इट्ठो < इष्टः–ष्ट को ट्ठ, विसर्ग को ओत्व।

अणिट्ठं < अनिष्टम्–न को ण, ष्ट के स्थान पर ट्ठ।

उट्ठो < उष्ट्रः–ष्ट के ष् का लोप और ट को द्वित्व।

संदट्ठो < संदृष्टः–दृ में रहने वाली ऋ के स्थान पर अ, ष् का लोप और ट को द्वित्व।

(१५५) चैत्य शब्द के त्य को छोड़कर अन्य त्य के स्थान में च आदेश होता है।[१] जैसे–

सच्चं < सत्यम्–त्य के स्थान पर च्च हुआ है।

पच्चओ < प्रत्ययः–त्य के स्थान पर च्च और य लोप और अ स्वर शेष, ओत्व।

णिच्चं, निच्चं < नित्यम्–न के स्थान पर वैकल्पिक ण और त्य को च्च।

पच्चच्छं < प्रत्यक्षम्–त्य को च्च और क्ष के स्थान पर च्छ।

(१५६) प्रत्यूष शब्द में त्य को च्च और ष को विकल्प से ह होता है।[२] जैसे–

पच्चूहो, पच्चूसो < प्रत्यूषः–त्य को च्च और प को ह।

(१५७) कुछ स्थलों में त्व, थ्व, द्व और ध्व के स्थान में क्रमशः च्च, च्छ, ज्ज और ज्झ आदेश होते हैं।[३] यथा–

भोच्चा < भुक्त्वा–त्व के स्थान पर च्च और क का लोप।

णच्चा < ज्ञात्वा–त्व के स्थान पर च्च।

सोच्चा < श्रुत्वा–रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स, उकार की ओत्व और त्व को च्च।

पिच्छी < पृथ्वी–थ्व को च्छ हुआ है और पृ की ऋ को इकार।

विज्जं < विद्वान्–द्वा के स्थान पर ज्ज और न को अनुस्वार।

बुज्झा < बुद्ध्वा–ध्व के स्थान पर ज्झ हुआ है।

---

१. त्यो चैत्ये ८।२।१३. हे.।

२. प्रत्यूषे षश्च हो वा ८।२।१४. हे.।

३. त्व–थ्व–द्व–ध्वां च–छ–ज–झाः क्वचित् ८।२।१५. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(१५८) धूर्तादिगण के शब्दों को छोड़कर अन्य र्त का ट आदेश विकल्प से होता है।[१] यथा–

केवट्टो < कैवर्त्तः–ऐकार को एकार, र्त्त को ट्ट और ओत्व।

वट्टी < वर्तिः–र्त के स्थान पर ट्ट और इकार को दीर्घ ईकार।

णट्टओ < नर्तकः–न को णकार, र्त को ट्ट और क लोप, अ स्वर शेष और ओत्व।

संवट्टिअं < संवर्तिकम्–र्त को ट्ट और क लोप तथा अ स्वर शेष।

पयट्टइ < प्रवर्तते–प्र के स्थान पर प, व लोप और अ स्वर शेष, यश्रुति, र्त के स्थान पर ट्ट और विभक्ति चिह्न इ।

वट्टुलं < वर्तुलम्–र्त के स्थान पर ट्ट।

रायवट्टयं < राजवर्तकम्–ज का लोप और अ स्वर के स्थान पर यश्रुति, र्त को ट्ट तथा क लोप और अ स्वर के स्थान पर यश्रुति।

विशेष–धूर्तादिगण के निम्न शब्दों में यह नियम लागू नहीं होता।

धुत्तो < धूर्तः–संयुक्त रेफ का लोप और त को द्वित्व और ऊकार को ह्रस्व।

कित्ती < कीर्त्तिः–रेफ का लोप, त को द्वित्व और इकार को दीर्घ।

वत्ता < वार्त्ता–रेफ का लोप, वा के आकार को ह्रस्व।

आवत्तणं < आवर्तनम्–संयुक्त रेफ का लोप, त को द्वित्व और न को ण।

निवत्तणं < निवर्तनम्– ,, ,, ,, ,,

पयत्तणं < प्रवर्त्तनम्–प्र को प ,, ,, ,, ,,

संवत्तणं < संवर्त्तनम्– ,, ,, ,, ,,

आवत्तओ < आवर्तकः– ,, ,, क लोप, अ स्वर शेष तथा ओत्व।

निवत्तओ < निवर्तकः– ,, ,, ,, ,,

पवत्तओ < प्रवर्तकः– ,, ,, ,, ,,

संवत्तओ < संवर्तकः– ,, ,, ,, ,,

वत्तिओ < वर्तकः– ,, ,, ,, ,,

वत्तिआ < वर्तिका–संयुक्त रेफ का लोप, त को द्वित्व और क लोप तथा आ स्वर शेष।

कत्तिओ < कर्त्तृकः–रेफ का लोप, ऋकार का इ, त को द्वित्व, क लोप और अ स्वर शेष तथा ओत्व।

---

१. र्तस्याधूर्तादौ ८।२।३०.। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

उक्कत्तिओ < उत्कर्त्तृकः–त लोप और क को द्वित्व, रेफ का लोप, ऋ को इकार, त को द्वित्व, क लोप, अ स्वर शेष और ओत्व।

कत्तरी < कर्त्तरी–रेफ का लोप।

मुत्ती < मूर्त्तिः–रेफ का लोप और इकार को दीर्घ।

मुत्तो < मूर्त्तः–रेफ का लोप, त को द्वित्व और विसर्ग को ओत्व।

मुहुत्तो < मुहूर्त्तः–हू के दीर्घ ऊकार को ह्रस्व, रेफ का लोप, विसर्ग को ओत्व।

(१५९) ह्रस्व से पर में वर्तमान थ्य, श्च, त्स और प्स के स्थान में छ आदेश होता है। पर निश्चल शब्द के श्च को छ आदेश नहीं होता है।[१] उदाहरण–

पच्छं < पथ्यम्–थ्य के स्थान पर च्छ हुआ है।

पच्छा < पथ्या– ,, ,,

मिच्छा < मिथ्या– ,, ,,

रच्छा < रथ्या– ,, ,,

पच्छिमं < पश्चिमम्–श्च के स्थान पर छ आदेश हुआ है।

अच्छेरं < अश्चर्यम्– ,, ,,

उच्छाहो < उत्साहः–त्स के स्थान पर च्छ आदेश हुआ है।

मच्छरो < मत्सरः – ,, ,,

वच्छो < वत्सः– ,, ,,

लिच्छइ < लिप्सति–प्स के स्थान पर च्छ आदेश।

जुगुच्छइ < जुगुप्सति–,, ,,

अच्छरा < अप्सरा– ,, ,,

ऊसारिओ < उत्सारितः–ह्रस्व से पर में रहने से उक्त नियम नहीं लगा।

णिच्चलो < निश्चलः–निश्चल शब्द में भी उक्त नियम नहीं लगता।

तत्थं, तच्चं < तथ्यम्–आर्ष रूप होने से उक्त नियम नहीं लगता।

(१६०) संयुक्त द्य, य्य और र्य्य के स्थान में ज आदेश होता है। यथा–

मज्जं < मद्यम्–द्य के स्थान पर ज्ज।

अवज्जं < अवद्यम्– ,, ,,

वेज्जम् < वेद्यम्– ,, ,,

विज्जा < विद्या– ,, ,,

---

१. ह्रस्वात् थ्य-श्च-त्स-प्सामनिश्चले ८।२।२१.। हे.।

२. द्य-य्य-र्यां जः ८।२।२४। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

जज्जो < जय्यः–य्य के स्थान पर ज।

सेज्जा < शय्या– ,, ,,

भज्जा < भार्य्या–र्य्या के स्थान पर ज।

कज्जं < कार्य्यम्– ,, ,,

वज्जं < वर्य्यम्–र्य्य के स्थान में ज्ज।

पज्जाओ < पर्य्यायः– ,, ,,

पज्जन्तं < पर्यन्तम्– ,, ,,

विशेष–शौरसेनी में र्य्य के स्थान पर य्य भी पाया जाता है।

(१६१) ध्य के स्थान में झ एवं म्न और ज्ञ के स्थान में ण आदेश होते हैं।[१] यथा–

झाणं < ध्यानम्–ध्य के स्थान पर झ आदेश

उवज्झाओ < उपाध्यायः–प का व, ध्य का झ, य लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

सज्झाओ < स्वाध्यायः–ध्य के स्थान पर ज्झ।

मज्झं < मध्यं– ,, ,,

अज्झाओ < अध्यायः– ,, ,, तथा य लोप अ स्वर शेष और ओत्व।

निण्णं < निम्नम्–म्न के स्थान पर ण्ण।

पज्जुण्णो < प्रद्युम्नः–प्र के स्थान पर प, द्यु के स्थान पर ज्जु और म्न के स्थान पर ण्ण।

णाणं < ज्ञानम्–ज्ञ के स्थान पर ण्ण आदेश।

सण्णा < संज्ञा– ,, ,,

पण्णा < प्रज्ञा– ,, ,,

विण्णाणं < विज्ञानम्– ,, ,, और न के स्थान पर ण।

(१६२) समस्त और स्तम्ब शब्द के स्त को छोड़कर अन्य स्त के स्थान में थ आदेश होता है।[२] यथा–

हत्थो < हस्तः– स्त के स्थान पर त्थ आदेश हुआ है।

थोत्तं < स्तोत्रम्–स्त के स्थान पर थ तथा त्र में संयुक्त त + र में से र का लोप और त को द्वित्व।

---

१. साध्वस–ध्य–ह्यां झः ८।२।२६. हे. तथा म्नज्ञोर्णः ८।२।४२. हे.।

२. स्तस्य थोसमस्त–स्तम्बे ८।२।४५. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

थोअं < स्तोकम्–स्तो के स्थान पर थो, क लोप और अ स्वर शेष।

पत्थरो < प्रस्तरः–स्त के स्थान पर त्थ, विसर्ग को ओत्व।

थुई < स्तुतिः–स्तु के स्थान पर थु और त का लोप, इकार को दीर्घ।

समत्तं <समस्तम्–स्त संयुक्त में से आदि वर्ण स् का लोप और त् को द्वित्व।

तंबो < स्तम्बः–आदि संयुक्त स् का लोप, म् को अनुस्वार और विसर्ग को ओत्व।

(१६३) संयुक्त न्म के स्थान में म आदेश होता है।[१] तथा–

जम्मो < जन्म–न्म को म्म आदेश।

मम्महो < मन्मथः–न्म के स्थान पर म्म और थ के स्थान पर ह, विसर्ग की ओत्व।

(१६४) ष्प और स्प के स्थान में फ आदेश होता है।[२] जैसे–

पुप्फं < पुष्पम्–ष्प के स्थान पर प्फ आदेश।

सप्फं < शष्पम्– ,, ,,

निप्फेसो < निष्पेषः ,, ,,

फंदणं < स्पन्दनम्–स्प के स्थान में फ आदेश और न को णत्व।

पडिप्फद्धी < प्रतिस्पर्धी–स्प के स्थान पर प्फ, संयुक्त रेफ का लोप। प्रति को पडि।

फंसी < स्पर्शः–स्प के स्थान पर फ, संयुक्त रेफ का लोप, ओत्व और अकारण अनुस्वार।

(१६५) संयुक्त श्न, ष्ण, स्न, ह्न और सूक्ष्म शब्द के सूक्ष्म के स्थान में ण्ह आदेश होता है।[३] उदाहरण–

विण्हू < विष्णुः–ष्ण के स्थान पर ण्ह तथा उकार को दीर्घ।

कण्हो < कृष्णः–कृ में रहने वाली ऋ के स्थान पर अ और ष्ण को ण्ह।

उण्हीसं < उष्णीष्म्–ष्ण के स्थान में ण्ह, मूर्धन्य ष को सत्व।

जोण्हा < ज्योत्स्ना–संयुक्तान्त्य य का लोप और त्स्ना के स्थान पर ण्हा।

ण्हाऊ < स्नायुः–स्न के स्थान पर ण्ह, य कार का लोप और ऊ स्वर शेष तथा दीर्घ।

ण्हाणं < स्नानम्–स्न के स्थान में ण्ह और न को णत्व।

वण्ही < वह्निः–ह्न के स्थान में ण्ह तथा ह्रस्व इकार को दीर्घ।

जण्हू < जह्नूः– ,, ,, तथा ह्रस्व उकार को दीर्घ।

---

१. न्मो मः ८।२।६१. हे.। २. ष्प–स्पयोः फः ८।२।५३. हे.।

३. सूक्ष्म–श्न–ष्ण–स्न–ह्न–ह्ण–क्ष्णां ण्हः ८।२।७५. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

पुव्वण्हो < पूर्वाह्णं–संयुक्त रेफ का लोप, व को द्वित्व, ह्ण के स्थान में ण्ह।

अवरण्हो < अपराह्णं–अप के स्थान पर अव और ह्ण के स्थान में ण्ह।

(१६६) संयुक्त श्म, ष्म, स्म और ह्म के स्थान में म्ह आदेश होता।[१] उदाहरण–

कम्हारो < काश्मीरः–श्म के स्थान पर म्ह आदेश ओर ईकार का आकार।

पम्हाइं < पक्ष्म–क्ष्मन् में से संयुक्त क् का लोप और स्म के स्थान पर म्ह।

कुम्हाणो < कुश्मानः–श्म के स्थान पर म्ह और न को णत्व।

कम्हारा < कश्मीराः–श्म के स्थान पर म्ह और ईकार के स्थान पर आकार।

गिम्हो < ग्रीष्मः–ष्म के स्थान पर म्ह और विसर्ग को ओत्व।

उम्हा < ऊष्मदा–ऊकार को उ और ष्म के स्थान पर म्ह।

अम्हारिसो < अस्मादृशः–स्म के स्थान पर म्ह और दृशः के स्थान पर रिसो।

विम्हओ < विस्मयः–स्म के स्थान पर म्ह और म लोप, अ स्वर शेष और ओत्व।

बम्हा < ब्रह्मा–संयुक्त रेफ का लोप, ह्म के स्थान पर म्ह आदेश।

सुम्हा < सुह्मा–ह्म के स्थान में म्ह आदेश।

बंभणो, बम्हणो < ब्राह्मणः–संयुक्त रेफ का लोप, ह्म के स्थान में म्ह और विकल्पाभाव में बंभ होता है।

बंभचेरं, बम्हचेरं < ब्रह्मचर्यम्–ह्म के स्थान पर म्ह तथा चर्यम् का चेरं।

रस्सी < रश्मिः–उक्त नियम लागू न होने से म लोप और स को द्वित्व।

सरो < स्मरः–उक्त नियम लागू न होने से म लोप।

(१६७) संयुक्त ह्य के स्थान पर झ आदेश होता है।[२] यथा–

सझो < सह्यः –ह्य के स्थान पर झ।

मझं < मह्यम्– ,, ,,

गुज्झं < गुह्यम्– ,, ,,

(१६८) संयुक्त ह्ल के स्थान में ल्ह आदेअ होता है।[३] जैसे–

कल्हारं < कह्लारम्–संयुक्त ह्ल के स्थान में ल्ह आदेश।

पल्हाओ < प्रह्लादः–संयुक्त रेफ का लोप, ह्ल के स्थान में ल्ह और द का लोप, अ स्वर शेष तथा ओत्व।

---

१. पक्ष्म–श्म–ष्म–स्म–ह्मां म्हः ८।२।७४. हे.।

२. ह्य ह्योः ८।२।१२४. हे.। ३. ह्लो ल्हः ८।२।७६. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(१६९) जिस संयुक्त अक्षर का अन्त लकार से होता है, उसका विप्रकर्षपृथक्करण हो जाता है और पूर्व के अक्षर को इत्व भी होता है।[१] यथा–

किलिण्णं < क्लिन्नम्–क और ल को अलग–अलग कर दिया तथा इत्व किया।

किलिट्टं < क्लिष्टम्–क और ल का पृथक्करण, इत्व और संयुक्त ष का लोप और ट को द्वित्व।

सिलिट्टं < श्लिष्टम्–स और ल का पृथक्करण, ष् लोप और ट को द्वित्व।

पिलुट्टं < प्लुष्टम्–प और ल का पृथक्करण, इत्व, ष् लोप और ट को द्वित्व।

सिलोओ < श्लोकः–श और ल का पृथक्करण, इत्व, क का लोप और अ स्वर शेष तथा ओत्व।

किलेसो < क्लेशः–क और ल का पृथक्करण, श को स, इत्व और तालव्य श को दन्त्य स।

मिलाणं < म्लानम्–म और ल का पृथक्करण, इत्व, न का णत्व।

किलिस्सइ < क्लिश्यति–क और ल का पृथक्करण, इत्व, य लोप और स को द्वित्व।

विशेष–कमो < क्लमः; पवो < प्लवः और सुक्कपक्खो < शुक्लपक्षः में उक्त नियम लागू नहीं होता।

(१७०) उकारान्त, किन्तु ङी प्रत्यायान्त तन्वी सदृश शब्दों में वर्तमान संयुक्ताक्षरों का विप्रकर्ष–पृथक्करण होता है और पूर्व के अक्षर में उकार योग हो जाता है।[२] यथा–

तिणुवी, तणुई–तन्वी = त और न (ण) का पृथक्करण और उत्व, व का लोप होने पर ई स्वर शेष।

लहुवी, लहुई < लघ्वी–,, ,, ,, ,, ,,

गुरुवी, गुरुई < गुर्वी– ,, ,, ,, ,, ,,

पुहुवी < पृथ्वी– ,, ,, ,, ,, ,,

सुहुमं < सूक्ष्मम्–सूक्ष्मम् के स्थान पर सुहुमं हो जाता है।

(१७१) जब श्वस् और स्व शब्द किसी समास के अंग न होकर पृथक् ही एक पद हों तो उनका विप्रकर्ष–पृथक्करण हो जाता है और पूर्व के व्यञ्जन में उ

---

१. लात्–८।२।१०६. हे.।

२. तन्वीतुल्येषु ८। २।११३. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

स्वर का योग भी हो जाता है।[१] यथा–

सुवे कअं < श्वः कृतम्–श् और व् का पृथक्करण, श को स, उत्व।

सुवे जना < स्वे जनाः–स् और व् का पृथक्करण एवं उत्व।

(१७२) ज्या शब्द में पृथक्करण और अन्त्य व्यंजन से पूर्व ईकार होता है।[२] यथा–

जीआ < ज्या–ज और या का पृथक्करण, ईत्व और य लोप तथा आ स्वर शेष।

❑ ❑ ❑

१. एकस्वरे श्वः–स्वे ८।२।११४. हे.।

२. ज्यायामीत् ८।२। ११५. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY